आज़ादी के तराने

निशांत द्वारा गाये जाने वाले गीतों का संग्रह

आज़ादी के तराने

निशांत नाट्य मंच

AZADI KE TARANE
Anthology of Pro-People Songs Sung by Nishant

पहला संस्करण मई 2000
दूसरा संस्करण मई 2002

निलिमा शर्मा द्वारा निशांत नाट्य मंच के लिए प्रकाशित तथा केहकशां ग्राफ़िक्स, जमियत बिल्डिंग, दिल्ली–110006 द्वारा मुदित

आज़ादी के तराने
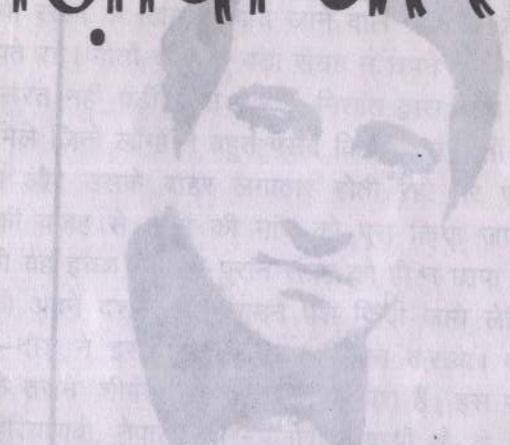
निशांत नाट्य मंच
द्वारा नीलिमा शर्मा,
1, स्टाफ परिसर,
सत्यवती कालेज,
अशोक विहार
दिल्ली-110052

डरता हूं बुझ न जाए कहीं शम्मे-रहगुज़र*
कुछ और खून इसमें जला लूं तो चैन लूं

जगमोहन 'असर' होशियारपुरी को समर्पित

'असर' एक कवि, मज़दूर आंदोलन के रहबर और नस्लवाद विरोधी तहरीक के बहादुर रहनुमा, होशियारपुर, पंजाब में सन् 1936 में पैदा हुए। सन् 1956 में इंग्लैंड पहुंचे। हिन्दुस्तानी मज़दूर सभा, इंग्लैंड, की नींव रखी, काले लोगों को नस्ली भेदभाव के ख़िलाफ़ संघर्षरत करने में हिरावल भूमिका निभायी और साथ ही साथ ज़ुल्म और अत्याचार के ख़िलाफ़ सशक्त और झिंझोड़ देने वाले गीत लिखे जो शोषित लोगों के आंदोलनों का अभिन्न अंग बन गये। 3 जून सन् 1979 को हाईड पार्क, लंदन, में सरकार की नस्लपरस्त नीतियों के खिलाफ एक बड़े जुलूस का नेतृत्व करते हुए दिल का दौरा पड़ने से मौत हुई।

* रास्ते पर रखी हुई शमा

गीतों से पहले

निशांत द्वारा गाये जाने वाले गीतों का मुकम्मल नया संग्रह लगभग 21 साल बाद छपकर सामने आ रहा है। अंतिम संग्रह 'कारवां चलता रहेगा' 1989 में छपा था जिसकी भूमिका डा. रामनारायाण शुक्ल ने लिखी थी। हालांकि इसके बाद सांप्रदायिकता, जंगी उन्माद और देश को साम्राज्यवादी ताकतों के हाथों गिरवी रखने के खिलाफ गाये जाने वाले गीतों के कई छोटे–छोटे संग्रह बराबर छपते रहे। गीतों का एक बड़ा संग्रह न छपने का कारण यह नहीं था कि उसकी जरूरत नहीं पड़ी। इस दौर में निशांत द्वारा बहुत गीत गाये गये, बहुत नये गीत मिले जिन्हें लोगों ने बहुत पसंद किया। इन गीतों की मांग भी भारतीय उपमहाद्वीप और उसके बाहर लगातार होती रही पर फोटोस्टेट की सस्ती तकनीक की वजह से गीतों की मांग को पूरा किया जाता रहा। निशांत के साथियों की यह इच्छा रही कि पुराने संग्रह को ही न छापा जाय बल्कि एक नये संकलन को अपने दर्शाकों के सामने पेश किया जाये लेकिन लगातार चलने वाली भाग–दौड़ ने इस काम में बहुत विलम्ब कराया। बहरहाल नया संग्रह 'आजादी के तराने' शीर्षक से आपके सामने पेश है। इस संग्रह में हिन्दी/उर्दू, भोजपुरी, हरियाणवी, नेपाली और पंजाबी भाषाओं के वो गीत शामिल हैं जो निशांत के साथी अक्सर गाते हैं। जो पंक्तियां मोटे अक्षरों में हैं उनको दोहराया जाना है।

इस संग्रह में निशांत द्वारा गाये जाने वाले गीतों में से कुछ चुनिन्दा गीत ही शामिल किये गये हैं। रचनाकारों के नाम हर गीत के साथ दिये गये हैं। इस संग्रह में प्रस्तुत कई गीत प्रगतिशील सांस्कृतिक आंदोलन का विरसा हैं जिनके बिना निशांत अपने काम में सांस्कृतिक धार नहीं ला सकता था। ब्रेख्त, जगमोहन 'असर' होशियारपुरी, फैज, दुखायल, मखदूम मोहिउद्दीन, शंकर शैलेन्द्र, प्रेमधवन, मार्टिन लुथर किंग, येजोन पोतियो, हबीब तनवीर, अली सरदार जाफ़री, गोरख पाण्डेय जैसे महान जनपक्षीय रचनाकारों और आजादी से पहले की इप्टा के गीतों ने न केवल हमारा रास्ता प्रशस्त किया बल्कि जनता तक पहुंचने के लिए सशक्त औज़ार भी उपलब्ध कराये। जबकि इनमें से बहुत से गीत ऐसे हैं जो रचनाकारों ने निशांत के लिए लिखे। ब्रजमोहन, रामकुमार कृषक, आनंद क्रांतिवर्धन, शीरीं, नीलिमा शर्मा, रमेश दत्त शर्मा सतबीर सिंह श्रमिक, अरविंद चतुर्वेदी जैसे साथियों ने निशांत की मांग पर लोगों की दिल की

आवाज बन जाने वाले गीत लिखे जिनके सहारे निशांत ने बहुत सी ज्वलंत समस्याओं में प्रभावशाली सांस्कृतिक हस्तक्षेप किया। साथी ब्रजमोहन के बम्बई चले जाने से निशांत को मिलने वाले गीतों में कमी आयी है जिसकी भरपाई होना फिलहाल मुमकिन नहीं लग रहा है। इस संग्रह में कई गीत ऐसे भी हैं जो निशांत के साथियों को देश के विभिन्न भागों में प्रस्तुतियों के दौरान दर्शक रचनाकारों ने उपलब्ध कराये। ये गीत इतने असरदार हैं कि बहुत जल्द ही सारे देश में लोकप्रिय हो गये और आज भी गाये जा रहे हैं। इस तरह के ज्यादा गीत भोजपुरी, हरियाणवी और नेपाली भाषाओं में हैं। इस संग्रह की एक विशेष बात यह भी है कि हमारे पड़ोसी देशों पाकिस्तान और नेपाल में जनपक्षीय सांस्कृतिक कर्मियों द्वारा गाये जाने वाले गीत शामिल हैं जिन्हें निशांत के साथी भी गाते हैं। इस संग्रह में नेपाली के वह गीत भी शामिल किये गये हैं जो निशांत द्वारा गाये जा रहे मूल हिन्दी गीतों से अनुवादित होकर नेपाल और उसके बाहर नेपाली भाषी दर्शकों के बीच में गाये जा रहे हैं।

हम महिला आंदोलन की बहादुर साथिनो कमला भसीन, माधव चौहान, शांति, सुशीला और आभा के आभारी हैं जिन्होंने ऐसे गीत लिखे जो जुल्म के खिलाफ़ हस्ताक्षर बन गये। निशांत के साथी बल्ली सिंह चीमा, भुवनेश्वर, विनय महाजन जैसे साथियों के भी ऋणी हैं जिन्होंने जुल्म और कट्टरता के खिलाफ ऐसे तराने रचे जो इस देश के कोने-कोने में गाये जा रहे हैं।

'आजादी के तराने', क्रांतिकारी गीतकार, इंग्लैंड में मजदूर आंदोलन के अगुवा और नस्लवाद विरोधी तहरीक के बहादुर सिपाही जगमोहन जोशी 'असर' होशियारपुरी (1936 से 1979) की याद को समर्पित है। उनके उर्दू गीत आज भारतीय उपमहाद्वीप में संघर्षरत जनता की लड़ाइयों के तराने बन गये हैं। हम अपने इस महान क्रांतिकारी रचनाकार साथी की याद को 'आजादी के तराने' गाते हुए हमेशा ज़िंदा रखने का संकल्प करते हैं।

शम्सुल इस्लाम

29 मई, 2000

गीतों की सूची

सहते-सहते मरने से अच्छी है लड़ाई

सहते–सहते मरने से
अच्छी है लड़ाई
ओ भाई हाथ उठा, ओ बहना हाथ उठा
तेरा भी होना सबको
देवे रे दिखाई
ओ भाई हाथ उठा, ओ बहना हाथ उठा

कल वही हो जो चाहे तेरा मन रे
जिंदगी बदलने का कर तू जतन रे
टूटेंगे ये पिंजरे तो
मिलेगी रिहाई
ओ भाई हाथ उठा, ओ बहना हाथ उठा

टूटे हुए सपनों को जोड़ना जरूरी
दिलों में हमारे भला कैसी है ये दूरी
पेड़ तो हमारे पर
छांव है परायी
ओ भाई हाथ उठा, ओ बहना हाथ उठा

घर तक पीछे–पीछे आया है अंधेरा
आंखों में हमारी दिखता है वो सवेरा
दुनियां में प्यार बचे
बचे सच्चाई
ओ भाई हाथ उठा, ओ बहना हाथ उठा

ब्रजमोहन

किसने चाहा था सूरज दिखायी न दे

किसने चाहा था सूरज दिखायी न दे
किसने चाहा था जीवन सुनायी न दे
किसने चाहा था ये क़त्ल होते रहें
और इन्सान अपनी गवाही न दे

किसकी आंखों में थी नींव दीवार की
किसके सीने में घर थे बिखरते हुए
किसके हाथों में किस–किस की बंदूक थी
किसने देखा है अपनों को मरते हुए
किसने चाहा था रिश्तों के पिंजरे बनें
कोई पिंजरा किसी को रिहाई न दे

कुछ भी सोचे बिना, कुछ भी समझे बिना
चल पड़े हम भला कौन सी राह पर
नफ़रतों का खुदा तो सलामत ही है
हम जलाने में मसरूफ़ हैं अपने घर
वक़्त ने हाथ काटे हैं किसके बता
भाई के हाथ में हाथ भाई न दे

जो पराये हैं वो कब किसी के हुए
पर जो अपने हैं उनको ये क्या हो गया
सबकी चाहें मरीं सबके सपने लुटे
सबके सीने में इक आदमी खो गया
मरने वालों पे भी कोई रो न सके
कोई दुनिया को ऐसी तबाही न दे
किसने चाहा था सूरज दिखायी न दे
किसने चाहा था जीवन सुनायी न दे

ब्रजमोहन

हारना है मौत तुम जीत बनो रे

लड़ते हुए सिपाही का गीत बनो रे
हारना है मौत तुम जीत बनो रे

फूलों से खिलना सीखो, पंछी से उड़ना
पेड़ों की छांव बनके धरती से जुड़ना
पर्वत से सीखो कैसे चोटी पे चढ़ना
गेहूं के दानों सी प्रीत बनो रे

जब बैठे–बैठे आंखें भर आएं दुख से
तब सोचना दिन कैसे बीतेंगे सुख से
दुख की लकीरें मिट जाएंगी मुख से
सूरज–सा उगने की रीत बनो रे

माथे पे छलके भाई जब भी पसीना
इक पल हवाओं के भी ओठों पे जीना
फिर देखना रे कैसे धड़केगा सीना
सीने में धड़के जो संगीत बनो रे

पाप का घड़ा आखिर फूटेगा भाई
पापी किस–किस से फिर छुटेगा भाई
कोई लुटेरा कब तक लूटेगा भाई
खून–पसीने के गीत बनो रे
लड़ते हुए सिपाही का गीत बनो रे
हारना है मौत तुम जीत बनो रे

ब्रजमोहन

जाम करो मिलके ये शोषण का पहिया

खाने को ना रोटी देंगे किशन कन्हैया
जालिमों से लड़ने को एक हो जा भैया
जाम करो मिलके ये शोषण का पहिया
मालिकों से लड़ने को एक हो जा भैया

तेरी ही कमाई पे खड़े ये कारखाने
तुझको ही मिलते न पेट भर दाने
गिद्धों के जैसा तुझसे मालिक का रवैया
मालिकों से लड़ने को एक हो जा भैया

हमसे न कम होगी मालिको की दूरी
खून चूस–चूस के जो देता है मजूरी
अपनी नैया के हम ही खिवैया
मालिकों से लड़ने को एक हो जा भैया

अपने दिलों में सदा उनके ही गीत
चाहते बदलना जो दुनिया की रीत
सीने में हमारे जिंदा किश्ता–भूमैया
जाम करो मिलके ये शोषण का पहिया
मालिकों से लड़ने को एक हो जा भैया

ब्रजमोहन

जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल

जब तक मालिक की नस-नस को हिला न दे भूचाल
जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल
न टूटे हड़ताल हमारी न टूटे हड़ताल

हम इतने सारों को मिल ये गिद्ध अकेला खाता
और हमारी मेहनत को भी अपने घर ले जाता
और जो मांगे हम अपना हक गुण्डों को बुलवाता
हम सबका शोषण करने को चले ये सौ–सौ चाल
जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल

सावधान ऐसे लोगों से जो बिचौलिया होते
और हमारे बीच सदा जो बीच फूट के बोते
और कि जिनके दम पर अफसर मालिक चैन से सोते
देखेंगे उनको भी जो हैं सरकारी दलाल
जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल

सही–सही मांगों को लेकर जब हम सामने आए
इसके अपने सगे सिपाही बन्दूकें ले आए
जाने अपने कितने साथी इसने हैं मरवाए
लेकिन सुन लो अब हम सारे जल कर बने मशाल
जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल

ब्रजमोहन

धरती को सोना बनाने वाले भाई रे

धरती को सोना बनाने वाले भाई रे
माटी से हीरा उगाने वाले भाई रे
अपना पसीना बहाने वाले भाई रे
उठ, तेरी मेहनत को लूटें हैं कसाई रे
धरती को सोना बनाने वाले भाई रे

मिल, कोठी, कारें, ये सड़कें ये इंजन
इन सब में तेरी ही मेहनत की धड़कन
तेरे ही हाथों ने दुनिया बनाई
तूने ही भरपेट रोटी न खाई
ठलुओं ने दुनिया तेरी लूट-लूट खाई रे
धरती को सोना बनाने वाले भाई रे

मिल–कारखानों में, कोयला खदानों में
खेत–खलिहानों में, सोने की खानों में
बहता है तेरा ही खून पसीना
ज़ालिम लुटेरों का पत्थर का सीना
सेठों के पेटों में है तेरी कमाई रे
धरती को सोना बनाने वाले भाई रे

धरती भी तेरी ये अम्बर भी तेरा
तुझको ही लाना है अपना सवेरा
तू अंधेरों में सूरज है भाई
तू ही लड़ेगा, सुबह की लड़ाई
तभी सारी दुनिया ये लेगी अंगड़ाई रे
धरती को सोना बनाने वाले भाई रे

ब्रजमोहन

जो जनता को लूटे खाये वो अपनी सरकार नहीं

इस सरकारी घाटे के हम तो ज़िम्मेदार नहीं
जो जनता को लूटे खाये वो अपनी सरकार नहीं
इस सरकारी घाटे के हम तो ज़िम्मेदार नहीं

भाड़े बढ़ते जाते हैं, सर पे चढ़ते जाते हैं
तनख्वाह गिनी गिनायी है, महंगाई महंगाई है
जो भी मेहनत करते हैं वो ही भूखे मरते हैं
और निकम्मे नेता सेठ सिर्फ़ ऐश ही करते हैं
हमने इतने साल सहा अब सहने को तैयार नहीं
इस सरकारी घाटे के हम तो ज़िम्मेदार नहीं
जो जनता को लूटे खाये वो अपनी सरकार नहीं

कपड़ा महंगा रोटी महंगी, मंजन साबुन चीनी महंगी
तेल है महंगा दालें महंगी, सब्जी भी अब खालें महंगी
कान खोलकर सुनो लुटेरो जनता आख़िर जनता है ये
जब भी तैश में आती है नेताओं को और सेठों को
गर्दन पकड़ दबाती है ये गर्दन पकड़ दबाती है
जनता से ताकतवर दुनिया में कोई हथियार नहीं
इस सरकारी घाटे के हम तो ज़िम्मेदार नहीं
जो जनता को लूटे खाये वो अपनी सरकार नहीं

मोबाइल और सोना सस्ता, महंगा है बच्चों का बस्ता
ये कैस जनहित का रस्ता, जनता की है हालत खस्ता
धरती मां को बेच जो खाए, कुछ उसका ईमान नहीं
इस सरकारी घाटे के हम तो ज़िम्मेदार नहीं
जो जनता को लूटे खाये वो अपनी सरकार नहीं

ब्रजमोहन

हाथ कुदाली रे हाथ हथौड़ा रे

हाथ कुदाली रे
ओ भैया हाथ कुदाली रे
तेरे दम से ही धरती पर है हरियाली रे
हाथ कुदाली रे
ओ भैया हाथ कुदाली रे

गरमी–सरदी आंधी–बारिश चाहे हो तूफ़ान
ज़मींदार के कोड़े तुझको करते लहुलुहान
जमींदार की आंखों से अब खींच ले लाली रे
हाथ कुदाली रे
ओ भैया हाथ कुदाली रे

हाथ हथौड़ा रे
औ भैया हाथ हथौड़ा रे
तेरी छाती से बढ़कर न पवर्त चौड़ा रे
हाथ हथौड़ा रे
औ भैया हाथ हथौड़ा रे

गला–गलाकर लोहे को तू ख़ुद इस्पात बना है
तेरे आगे कोई सीना कब तक भला तना है
हर युग में खूनी जबड़ों को तूने तोड़ा रे
हाथ हथौड़ा रे
औ भैया हाथ हथौड़ा रे

ज़हरीले सांपों का दुश्मन तू सबसे पहला है
ज़हरीले सांपों को तूने हर युग में कुचला है
ज़िंदा अपने दुश्मन को ना तूने छोड़ा रे
हाथ हथौड़ा रे
औ भैया हाथ हथौड़ा रे
हाथ कुदाली रे
ओ भैया हाथ कुदाली रे

ब्रजमोहन

चले चलो दिलों में घाव लेके भी चले चलो

चले चलो दिलों में घाव लेके भी चले चलो
चलो लहूलुहान पांव लेके भी चले चलो
चलो कि आज साथ-साथ चलने की ज़रूरतें
चलो कि ख़त्म हो न जाएं ज़िंदगी की हसरतें

ज़मीन, ख़्वाब, ज़िंदगी, यक़ीन सबको बांटकर
वो चाहते हैं बेबसी में आदमी झुकाए सर
वो चाहते हैं ज़िन्दगी हो रोशनी से बेख़बर
वो एक–एक करके अब जला रहे हैं हर शहर
जले हुए घरों के ख़्वाब लेके भी चले चलो

वो चाहते है बांटना ये ज़िंदगी के काफ़िले
वो चाहते हैं बांटना ये ज़िंदगी के वलवले
वो चाहते है ख़त्म हो उम्मीद के ये सिलसिले
वो चाहते हैं गिर सकें न लूट के ये सब क़िले
सवाल ही हैं अब जवाब लेके भी चले चलो

वो चाहते हैं जातियों की, बोलियों की फूट हो
वो चाहते हैं धर्म को तबाहियों की छूट हो
वो चाहते हैं ज़िंदगी में हो फ़रेब, झूट हो
वो चाहते हैं जिस तरह भी हो मगर ये लूट हो
सिरों पे जो बची है छांव लेके भी चले चलो
चले चलो दिलों में घाव लेके भी चले चलो
चलो लहूलुहान पांव लेके भी चले चलो

ब्रजमोहन

खो गए तुम हवा बनकर, वतन की हर सांस में

ज़िंदगी लड़ती रहेगी-गाती रहेगी
नदियां बहती रहेंगी-बहती रहेंगी
कारवां चलता रहेगा-बढ़ता रहेगा
मुक्ति की राह पर, छोड़कर साथियों
तुमको, धरती की गोद में।
कारवां चलता रहेगा-बढ़ते रहेगा

खो गए तुम हवा बनकर, वतन की हर सांस में
बिक चुकी इन वादियों में गंध बनकर घुल गए
भूख से लड़ते हुए बच्चों की घायल आस में
क़र्ज़ में डूबी हुई फसलों की रंगत बन गए
ख्वाबों के साथ तेरे चलता रहेगा
कारवां चलता रहेगा-बढ़ता रहेगा

हो गए कुर्बान जिस मिट्टी की ख़ातिर साथियों
सो रहो अब आज उस ममतामयी की गोद में
मुक्ति के दिन तक फ़िज़ां में खो चुकेंगे नाम तेरे
देश की हर सांस में ज़िंदा रहोगे साथियो
यादों के साथ तेरे चलता रहेगा
कारवां चलता रहेगा-बढ़ता रहेगा

जब कभी भी लौटकर इन राहों से गुज़रेंगे हम
जीत के सब गीत कई–कई बार हम फिर गायेंगे
खोज कैसे पायेंगे मिट्टी तुम्हारी साथियों
ज़र्रे–ज़र्रे को तुम्हारी ही समाधि पायेंगे
लेकर ये अरमां दिल में चलता रहेगा
कारवां चलता रहेगा-बढ़ता रहेगा
मुक्ति की राह पर, छोड़कर साथियों
तुमको, धरती की गोद में।
कारवां चलता रहेगा-बढ़ते रहेगा

शशिप्रकाश

उठो साथियो आज चले हम मुक्त कराने देश को

उठो साथियो आज चले हम मुक्त कराने देश को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को
देखो बिड़ला–टाटा–बाटा
कहते रोज़–रोज़ का घाटा
अपने घर की भरें तिजोरी, भेजें माल विदेश को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को
देखो जाति धरम का घेरा
देखो दलालों का फेरा
पंडित, नेता, संत, मौलवी लूटें अपने देश को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को
लकदक नेता खद्दर–धारी
कुर्सी लालच मारा–मारी
बगुला भगत बनें जनता में नोचो नकली भेष को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को
मालिक अपनाए हथकडे
उसके कई पालतू गुण्डे
नेता–अफ़सर उसके बन्दे
खाते हम सरकारी डण्डे
कोर्ट, कचहरी, अंधी,बहरी नहीं सुनेगी केस को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को
लहरें गंगा–यमुना धारा
सारा हिन्दुस्तान हमारा
अपना खुद ही बनें सहारा
एका यही समय का नारा
पूरब–पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एक करें हम देश को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को
उठो साथियो आज चले हम मुक्त कराने देश को

अरविंद चतुर्वेदी

हमारी सारी दुनिया, न देखो आसमान

हमारी सारी दुनिया, न देखो आसमान
आसमान में देख सितारे
तू काहे हाथ पसारे
इक–इक बूंद पसीने की
बिजली के लट्टू सारे
हमारी मुस्कान
हमीं से रोशन दुनिया, न देखो आसमान
हमारी सारी दुनिया, न देखो आसमान
हरी फसल का मौसम आए
मन को काहे लगे पराए
आंखों में बदली छा जाए
फिर सूखा लहराए
अजब दास्तान
लुटी है अपनी दुनिया, न देखो आसमान
हमारी सारी दुनिया, न देखो आसमान
गरज–गरजकर बादल बरसे
बरसे पत्थर पानी
आलीशान महल मुस्काए
रोए छप्पर छानी
कहां है भगवान
इंसानी सारी दुनिया, ना देखो आसमान
हमारी सारी दुनिया, न देखो आसमान
अपने हाथ में दम है इतना
बांध फैक्टरी सड़क अटारी
सब कुछ हमसे मगर ग़ैर का
हक पर चले कटारी
उठाओ तूफान
उलट दो सारी दुनिया ना देखो आसमान
पलट दो सारी दुनिया, न देखो असमान
हमारी सारी दुनिया, न देखो आसमान

अरविन्द चतुर्वेदी

हम मज़दूर-किसान

हम मज़दूर-किसान...हम मज़दूर-किसान
हम मज़दर-किसान रे भैया हम मज़दूर-किसान
हम जागे है अब जागेगा असली हिन्दुस्तान
हम मज़दूर-किसान रे भैया हम मज़दूर-किसान
अपनी सुबह सुर्ख़रू होगी अंधेरा भागेगा
हर झुग्गी अंगड़ाई लेगी हर छप्पर जागेगा
शोषण के महलों पर मेहनतकश गोली दागेगा
शैतानों से बदला लेगी धरती लहूलुहान,
हम मज़दूर-किसान रे भैया हम मज़दूर-किसान

मिल मज़दूर और हलवाहे दोनों संग चलेंगे
खोज–खोज डसने वाले सांपों का फन कुचलेंगे
खुशहाली को नई ज़िंदगी देने फिर मचलेंगे
मुश्किल से टकराकर होगी हर मुश्किल आसान,
हम मज़दूर-किसान रे भैया हम मज़दूर-किसान

हरी–भरी धरती पर अपना अम्बर होगा
नदियों की लहरों सा जीवन कितना सुन्दर होगा
सबसे ऊंचा सबसे ऊपर मेहनत का सिर होगा
छीन नहीं पायेगा कोई बच्चों की मुस्कान,
हम मज़दर-किसान रे भैया हम मज़दूर-किसान
हम जागे है अब जागेगा असली हिन्दुस्तान
हम मज़दूर-किसान रे भैया हम मज़दूर-किसान

रामकुमार कृषक

होंगे कामयाब एक दिन

होंगे कामयाब हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
पूंजीवाद का होगा नाश
पूंजीवाद का होगा नाश एक दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
सामंतवाद का होगा नाश
सामंतवाद का होगा नाश एक दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
साम्राज्यवाद का होगा नाश
साम्राज्यवाद का होगा नाश एक दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
जीतेंगे मजदूर जीतेंगे किसान
जीतेंगे नौजवान एक दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
होगी क्रांति चारों ओर
होगी शांति चारों ओर एक दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
हम चलेंगे साथ, डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ, एक दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम चलेंगे सा-साथ, एक दिन
नहीं डर किसी का आज, नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन
हो-हो....मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन
(मार्टिन लूथर किंग के गीत पर आधारित)

रहेंगे एक सब जहां के नौजवान

एक हैं हमारी आज राहें
और एक है हमारा आज गान
चाहे लाख तूफ़ान आयें
रहेंगे एक सब जहां के नौजवान

हरके देश और हर जाति
जवानों के ही दम से जगमगाती
गा रहे हैं नौजवां बनाओ इक नया जहां
कि जिसमें हो न जुल्म का निशान
गाते गीत अमन के बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो
अपनी आन के लिए लड़े चलो, लड़े चलो, लड़े चलो
हम हैं जवान हम चलें तो
साथ चलता है ज़मीन–असमां

एक है हमारी आज आशा
और एक है हमारा अरमान
कोई देश हो या कोई भाषा
पर समझते हैं दिलों को हम जुबान
हम फ़र्क ऊंच नीच का न जानें
न भेद जात–पात का ही मानें
गा रहे हैं नौजवां बनाओ इन नया जहां
कि जिसमें हो न जुल्म का निशान
गाते गीत अमन के बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो
अपनी आन के लिए लड़े चलो, लड़े चलो, लड़े चलो
हम हैं जवान हम चलें तो
साथ चलता है जमीन–असमां
एक हैं हमारी आज राहें
और एक है हमारा आज गान
चाहे लाख तूफ़ान आयें
रहेंगे एक सब जहां के नौजवान

इप्टा

है लाल हमारा परचम

है लाल हमारा परचम परचम है हमारा लाल
जब ज़ुल्म करे हत्यारा और रहे ना कोई चारा
क्या होगा अपना नारा, नारा होगा हड़ताल
है लाल हमारा परचम परचम है हमारा लाल

मज़दूरों और किसानों का ये परचम
सब कुचले हुए इन्सानों का ये परचम
आज़ादी के दीवानों का ये परचम
इस परचम में सदियों का रंजोमलाल
है लाल हमारा परचम परचम है हमारा लाल

पैमाने वफ़ा ऐलाने जंग है परचम
खुद अपनी बुलंदी देख के दंग है परचम
मज़दूर के दिल का खून है परचम
खूनी परचम है इंकलाब का लाल
है लाल हमारा परचम परचम है हमारा लाल
ये परचम है के सितारा तूफ़ान है या अंगारा
परचम है लाल हमारा
परचम है हमारा लाल
है लाल हमारा परचम परचम है हमारा लाल

हबीब तनवीर

लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे

लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे
तुम नहीं रहे इसका ग़म है पर फिर भी लड़ते जाएंगे
लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे

इस जहान के सारे नौजवान चल पड़े हैं आज तेरी राह पे
कर रहे हैं वार बार–बार वे ज़ालिमों के किले के द्वार पे
भूखे पेटों से आ रही सदा इक नया जहां हम बनाएंगे

लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे
तुम नहीं रहे इसका ग़म है पर फिर भी लड़ते जाएंगे
लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे

कृषक श्रमिक के हर समूह से उठ रहे हैं आज नारे क्रांति के
ज़ुल्म और मौत के ख़िलाफ़ आज लड़ने की क़सम खा रहे हैं हम
विश्व को स्वतंत्र करके ज़ुल्म से शोषण का नाम हम मिटायेंगे

लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे
तुम नहीं रहे इसका ग़म है पर फिर भी लड़ते जाएंगे
लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे

परचम

ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम

ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम इस खून का बदला हम लेंगे
इस खून का बदला हम लेंगे
ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम इस खून का बदला हम लेंगे
तुम अतिश-ए-नफ़रत[1] सुलगाओ मैं जोश-ए-गज़ब[2] गरमाता हूं
तुम तेज़ करो तलवारों को मैं तेशे[3] भाले लाता हूं
जो खून गिरा है धरती पर
इंसाफतलब[4] दीवानों का, बेख़ौफ़–व–खतर[5] परवानों का
ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम
वो खून हमारा सबका है
इस खून का बदला हम लेंगे
ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम इस खून का बदला हम लेंगे
कभी हमने भगतसिंह को कभी दत्त[6] को किया पैदा
लमूंबा[7] बन के आए हम कभी हम रूप उधम का
नहीं परवाह हमें इन फांसियों की, कतलगाहों[8] की
खुशी से मर तो सकते है मगर झुकना नहीं आता
ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम इस खून का बदला हम लेंगे
निकाली हमने हैं राहें पहाड़ों तक के सीनों से
चट्टानें चीर दी हमने बढ़े जब भी यक़ीनों से
हमारे आहनी[9] बाज़ू हमारे अज़्म[10] फौलादी
जो हम चाहें तो सोना उग पड़े बंजर ज़मीनों से
ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम इस खून का बदला हम लेंगे
हमारे दोनों पहलू हैं कभी शोला कभी शबनम
बराए[11] दुश्मनां खंजर बराए दोस्तां मरहम
हमें पहचान कौन अपना है और कौन बेगाना
कभी हम तीशा–ए–नफ़रत[12] कभी हम इश्क़ का परचम
ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम इस खून का बदला हम लेंगे
हमीं ने रूस के ज़ारों को सिंहासन हिलाया था
हमीं ने इन्क़लाब–ए–चीन का झंडा झुलाया था
वो चाहे मशरिक़ी–यूरोप[13] था या क्यूबा की धरती थी
हमीं अहल–ए–वफ़ा[14] ने जाबिरों[15] को चित्त गिराया था
ऐ लाल फरेरे तेरी क़सम इस खून का बदला हम लेंगे

जगमोहन 'असर' होशियारपुरी

1.नफ़रत की आग 2.गुस्से से भरा जोश 3. कुदाल 4. इंसाफ चाहने वाले 5. डर और खतरों से बेपरवाह 6. शहीद बटुकेश्वर दत्त 7. अफ्रीकी नेता जिनकी सीआईए ने हत्या करायी थी 8 कत्ल करने की जगह 9. लोहे जैसा 10. इरादे 11. के लिए 12. नफ़रत की कुदाल 13. पूर्वी यूरोप 14. वफ़दार 15 ज़ालिमो

हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे

हर दिल में बग़ावत के शोलों को जगा देंगे
हम जंग-ए-आवामी[1] से कोहराम मचा देंगे
हो जाएगी ये दुनिया फिर तीरा[2] नसीबों की
मज़दूर किसानों की, भूखों की ग़रीबों की
रौंदे हुए ज़र्रों[3] को खुरशीद[4] बना देंगे
खुरशीद बना देंगे
हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे

हक़ छीनने वालों से उम्मीद–ए–कर्म[5] क्यों हो
इंसाफ़ लूटेरों से हमको यह भ्रम क्यों हो
हम ताकत–ए–बाज़ू[6] से जाबिर[7] को मिटा देंगे
जाबिर को मिटा देंगे
हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे

महकूम[8] जो उठ बैठें हर ज़ुल्म पे भारी हैं
फिर खेत हमारे है मिल्लें[9] भी हमारी हैं
हर चीज़ हमारी हैं, हाकिम[10] को बता देंगे
हाकिम को बता देंगे
हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे

क़िस्मत के खिलौनों से बहलाया गया हमको
धोखों से फरेबों से हथियाया गया हमको
यह झूठ का सिंहासन ठोकर से गिरा देंगे
ठोकर से गिरा देंगे
हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे

फिर जागा तेलंगाना, बंगाल ने करवलट ली
हर खेत सुलग उठे, फिर अतिश–ए–ग़म[11] भड़की
इन क़हर के शोलों से शैतान जला देंगे

शैतान जला देंगे
हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे

दिल्ली के खुदावन्दो[12] एलान हमारा है
ऐ क़ातिल–वो–बदकारो[13] फरमान हमारा है
तुम दुश्मन–ए–इन्सां हो हम तुख़्म[14] उड़ा देंगे
हम तुम्हें उड़ा देंगे
हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे
हर दिल में बगावत के शोलों को जगा देंगे
हम जंग-ए-आवामी से कोहराम मचा देंगे

जगमोहन 'असर' होशियारपुरी

1. लोक संग्राम 2. अंधकारमय 3. कण 4. सूरज 5. रहम की उम्मीद 6. हाथों की ताकत 7. जालिम 8 शोषित 9. कल–कारखाने 10. शासक 11. दुःख की आग 12. मालिकों 13. दूराचारी व कातिल 14- बीज।

दिल्ली दूर नहीं है यारो

दिल्ली दूर नहीं है यारो
दिल्ली के असली हक़दारों
भूखे पेटो, नंगे बदनो
दुख के पोसो दर्द के पालो
हम वतनो अफ़लास[1] के मारो

दिल्ली दूर नहीं है यारो
दो फूंकों से गिर जाएगी
शीशा फूट के रह जाएगा
जादू टूट के रह जाएगा
दिल्ली दूर नहीं है यारो

नित दिन पौ फटने से पहले
तपते सूरज की गर्मी में
शाम के साये ढल जाने तक
तुम हल जोतो फसल उगाओ
खेत का ज़र्रा–ज़र्रा सींचो
हंसते गाते खून बहाओ
लेकिन खुद भूखे के भूखे
तुम पर यह भी जब्र[2] हुआ है
जब्र की आखिर हद होती है
सब्र की आखिर हद होती है
दिल्ली दूर नहीं है यारो
फ़ाकों[3] से तंग आकर अक्सर
तुमने खुदकुशियां भी की हैं
मीनारों से कूद पड़े हो
गाड़ी के पहिओ से लड़े हो
बीवी को नीलाम किया है,
बहन का चर्चा आम किया

तुम पर यह भी जब्र हुआ है
जब्र की आखिर हद होती है
सब्र की आखिर हद होती है
दिल्ली दूर नहीं है यारो
हम वतनों अफलास के मारों
दिल्ली के असली हकदारों

खेतों को आग़ोश से उठो
देहातों में लावा उगलो
गंदम[4] के बोरों तक फैलो
धान के गोदामों तक नाचो
तेशे, भाले, नेज़े[5] ख़ंजर
हाथ में जो कुछ आये थामो
आंधी वाला रूप बना कर
तूफानी जुर्रत[6] अपना के
डेरे डालो नगरी–नगरी
क़हर मचा हो बस्ती–बस्ती
दिल्ली दूर नहीं है यारो
हम वतनों अफलास के मारों
दिल्ली के असली हकदारों

मुट्ठी भर दानों की ख़ातिर
तुमने सदियों सब्र किया है
सब्र की आखिर हद तोती है
जब्र की आखिर हद होती है
दिल्ली दूर नहीं है यारो
हम वतनों अफलास के मारों
दिल्ली के असली हकदारों

जगमोहन 'असर' होशियारपुरी

1.दरिद्रता 2. जुल्म 3. भूख 4. गेहूं 5. बल्लम 6. हिम्मत

कौन आज़ाद हुआ

कौन आज़ाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
मेरे सीने में अभी दर्द है महकूमी[1] का
मादर–ए–हिन्द के चेहरे पे उदासी है वही
कौन आजाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
खंजर आज़ाद है सीने में उतरने के लिए
मौत आज़ाद है लाशों पे गुज़रने के लिए
कौन आजाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
काले बाज़ार में बदशक्ल चुड़ैलों की तरह
क़ीमतें काली दुकानों पे खड़ी रहती हैं
हर ख़रीददार की जेबों को कतरने के लिए
कौन आजाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
कारख़ानों में लगा रहता है
सांस लेती हुई लाशों का हुजूम[2]
बीच में उनके फिरा करती है बेकारी भी
अपने खूंख़ार दहन[3] खोले हुए
कौन आजाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
रोटियां चकलों की कहबाएं[4] हैं
जिनको सरमाए के दलालों ने
नफ़ख़ोरी के झरोखों में सजा रक्खा है
बालियां धान की गेहूं के सुनहरे खोशे[5]
मिस्र–ओ–यूनान[6] के मज़दूर गुलामों की तरह
अजनबी देश के बाज़ारों में बिक जाते हैं
और बदबख़्त किसानों की तड़पती हुई रूह[7]
अपने अफ़लास[8] में मुंह ढांप के सो जाती है
कौन आज़ाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
मेरे सीने में अभी दर्द है महकूमी का
मादर-ए-हिन्द के चेहरे पे उदासी है वही

अली सरदार जाफ़री

1.गुलामी 2. भीड़/ढेर 3.मुंह 4.तवाइफ़ें 5. गुच्छा 6. मिस्र और यूनन देश 7.आत्मा, 8. दरिद्रता

तू ज़िन्दा है

तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएंगे गुज़र, गुज़र गये हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नज़र
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
सुबह–ओ–शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम–झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर
तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
हज़ार भेष धर के आई मौत तेर द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी,चली गई वो हार कर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
हमारे कारवां को मंज़िलों का इंतज़ार है
ये आंधियों, ये बिजलियों की पीठ पर सवार है
तू आ क़दम मिला के चल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
ज़मीं के पेट में पला अमन, पले हैं ज़लज़ले
टिके न टिक सकेंगे भूख, रोग के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार जमीन पर
तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
बुरी है आग पेट की, बुरे हैं दिल के दाग ये
न दब सकेंगे, एक दिन बनेंगे इंकलाब ये
गिरेंगे जुल्म के महल, बनेंगे फिर नवीन घर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर
तू जिन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर

शंकर शैलेन्द्र

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
जिन्दगी आंसुओं में नहायी न हो
शाम सहमी न हो, रात हो न डरी
भोर की आंख फिर डबडबायी न हो
इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें

सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे
रोशनी रोशनाई में डूबी न हो
यूं न ईमान फ़ूटपाथ पर हो खड़ा
हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो
आसमां में टंगी हों न खुशहालियां
क़ैद महलों में सबकी कमाई न हो
इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें

कोई अपनी ख़ुशी के लिए ग़ैर की
रोटियां छीन ले हम नहीं चाहते
छींटकर थोड़ा चारा कोई उम्र की
हर ख़ुशी बीन ले हम नहीं चाहते
हो किसी के लिए मख़मली बिस्तरा
और किसी के लिए एक चटाई न हो
इसलिए राह संघर्ष की हम चुने

अब तमन्नायें फिर न करें खुदकुशी
ख़्वाब पर ख़ौफ़ की चौकसी न रहे
श्रम के पावों में हों न पड़ी बेडियां
शक्ति की पीठ अब ज़्यादती न सहे
दम न तोड़े क़हीं भूख से बचपना
रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो
इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
जिन्दगी आंसुओं में नहायी न हो
शाम सहमी न हो, रात हो न डरी
भोर की आंख फिर डबडबायी न हो
इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें

वशिष्ठ अनूप

जागा रे, जागा रे

जागा रे जागा रे जागा सारा संसार
फूटी किरण लाल है खुलता है पूरब का द्वार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

अंगडाई लेती ये धरती उठी है, धरती उठी है
सदियों की ठुकराई मिट्टी उठी है, मिट्टी उठी है
टुटें हो टुटें गुलामी के बंधन हज़ार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

आया जमाना होअपना ज़माना, अपना ज़माना
किस्मत काये रोना गाना पुराना, गाना पुराना
बदलेंगे हम अपनी जीवन की नदिया की धार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

पर भूखा कहता है यूं न मरूंगा, यूं न मरूंगा
मैं जा के मालिक को नंगा करूंगा, नंगा करूंगा
ढाह दूंगा दुखियारी लाशों पे उठती दीवार
ओ जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

इप्टा

मशालें लेकर चलना

मशालें लेकर चलना, जब तक रात बाकी है
संभालकर हर कदम रखना, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना

मिले मंसूर को सूली, ज़हर सुकरात के हिस्से
रहेगा जुर्म सच कहना, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना

पसीने को तो तुम छोड़ो लहू मज़दूर का यारो
सस्ता पानी से रहेगा, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना

जब तक रहेंगे सिंगार हर महफिल पे उल्लू ही
पपीहे की सुनेगा कौन ज़ब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना

झुका सर को तू मंदिर में, या मस्जिद में तू कर सजदा
तेरे ग़म तो न होंगे कम जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना

तेरे मस्तक पे होगा हर पल विद्रोह का निशां
न ही जोश कम होगा जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना

अंधेरां की अदालत में, है क्या फरियाद का फायदा
तू कर संग्राम ऐ साथी, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना

ले मशालें चल पड़े हैं

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गांव के
अब अंधेरा जीत लेंगे लोगे मेरे गांव के

पूछती है झोंपड़ी और पूछते हैं खेत भी
कब तलक लूटते रहेंगे लोग मेरे गांव के

चीखती है हर रूकावट ठोकरों की मार से
बेड़ियां खनका रहे हैं लोग मेरे गांव के

लाल सूरज अब उगेगा देश के हर गांव में
अब इकट्ठा हो चले हैं लोग मेरे गांव के

तेलंगाना जी उठेगा देश के हर गांव में
अब आंदोलन ही करेंगे लोग मेरे गांव के

देख यारा जो सुबह लगती है फीकी आजकल
लाल रंग उसमें भरेंगे लोग मेरे गांव के

बल्लीसिंह चीमा

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की,
महकूमों[1] की मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की,
दहकानों[2] की मज़दूरों
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
सारा संसार हमारा है
पूरब, पश्चिम, उत्तर दक्खिन
हम अफ़रंगी[3] हम अमरीकी
हम चीनी जांबाज़ाने–वतन[4]
हम सुर्ख़ सिपाही जुल्म–शिकन[5]
आहन पैकर[6] फौलाद–बदन
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
वो जंग ही क्या वो अमन ही क्या,
दुश्मन जिसमें ताराज[7] न हो
वो दुनिया दुनिया क्या होगी,
जिस दुनिया में स्वराज न हो
वो आज़ादी–आज़ादी क्या,
मज़दूर का जिसमें राज न हो
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
लो सुर्ख़ सवेरा आता है,
आज़ादी का आज़ादी का
गुलनार[8] तराना गाता है,
आज़ादी का आज़ादी का
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आजादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की,
महकूमों की मजबूरों की
आजादी के मतवालों की,
दहकानों की मजदूरों की
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी

मख़दूम मुहिउद्दीन

1. शोषित 2. किसानों 3. यूरोपीय 4. वतन पर जान देने वाले 5. जुल्म को मात देने वाले 6. लोहा पहने 7.नेसतोनाबूद 8.गुलाब की तरह

हम मेहनतकश जग वालों में

हम मेहनतकश जग वालों से
जब अपना हिस्सा मांगेंगे
इक खेत नहीं एक देश नहीं
हम सारी दुनिया मांगेंगे
हम मेहनतकश जग वालों से

यहां पर्वत–पर्वत हीरे हैं
यहां सागर–सागर मोती हैं
ये सारा माल हमारा है
हम सारा खजाना मांगेंगे
हम मेहनतकश जग वालों से

जो खून बहा जो बाग़ उजड़े
जो गीत दिलों में क़त्ल हुए
हर क़तरे का हर गुंचे का
हर गीत का बदला मांगेंगे
हम मेहनतकश जग वालों से

ये सेठ व्यापारी, रजवाड़े
दस लाख, तो हम दस लाख करोड़
कब तक ये अमरीका से
जीने का सहारा मांगेंगे
हम मेहनतकश जग वालों से

जब सफ़[1] सीधी हो जाएगी
जब सब झगड़े मिट जाएंगे
हम हर इक देश के झंडे पर
एक लाल सितारा मांगेंगे
हम मेहनतकश जग वालों से

फ़ैज़

1. पंक्ति

ये वक़्त की आवाज़ है मिल के चलो

मिल के चलो, मिल के चलो, मिले के चलो
चलो भाई, मिल के चलो, मिल के चलो
ये वक़्त की आवाज़ है मिल के चलो
ये ज़िन्दगी का राज़ है मिल के चलो
मिल के चलो, मिल के चलो, मिले के चलो

आज दिल की रंजिशें मिटा के आओ
आज भेदभाव सब भुला के आ
आज़ादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम
क़दम से क़दम और दिल से दिल मिला के आओ
मिल के चलो, मिल के चलो, मिले के चलो

ये भूख क्यों ये ज़ुल्म का है ज़ोर क्यों
ज़ोर क्यों, ज़ोर क्यों
ये जंग–जंग–जंग का है शोर क्यों
शोर क्यों, शोर क्यों
हर इक नजर बुझी–बुझी हरेक दिल उदास
बहुत फ़रेब खाये अब फ़रेब और क्यों
मिल के चलो, मिल के चलो, मिले के चलो

जैसे सुर से सुर मिले हों राग के
राग के, राग के
जैसे शोले मिल के बढ़ें आग के
आग के आग के
जिस तरह चिराग़ से जले चिराग़
ऐसे चलो भेद तेरा त्याग के
मिल के चलो, मिल के चलो, मिले के चलो

प्रेम धवन

क्रांति के लिए उठे कदम

क्रांति के लिए उठे क़दम
क्रांति के लिए जली मशाल
भूख के विरूद्ध भात के लिए
रात के विरूद्ध प्रातः के लिए
मेहनती ग़रीब जात के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली क़सम
क्रांति के लिए उठे क़दम
छिन रहीं हैं आदमी की रोटियां
बिक रहीं हैं आदमी की बोटियां
किन्तु सेठ भर रहे हैं कोठियां
लूट का ये राज हो खत्म
क्रांति के लिए उठे क़दम
गोलियों की गन्ध में घुटी हवा
हिन्द जेल आग में तपा तवा
खद्दर ही सफ़ेद कोढ़ की दवा
ख़ून का स्वराज हो ख़त्म
क्रांति के लिए उठे क़दम
जंग चाहते हैं आज जंगख़ोर
ताकि राज कर सकें हरामख़ोर
पर जवान है, जवान है कठोर
डालरों का जोर हो ख़त्म
रूबलों को जोर हो खत्म
शांति के लिए उठे क़दम
क्रांति के लिए उठे क़दम
भूख के विरूद्ध भत के लिए
रात के विरूद्ध प्रातः के लिए
मेहनती ग़रीब जात के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली क़सम

शंकर शैलेन्द्र

हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक हैं

हम मेहनत करने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक है, एक हैं
हम कोरिया में, हम हैं हन्दुस्तान में
हम रूस में हैं, चीन में, जपान में
हम अमरीका में, हम हैं इंग्लिस्तान में
हम हैं दुनिया के हर सच्चे इंसान में
हम क्या गोरे क्या काले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक है, एक हैं
हम मेहनत करने वाले सब एक हैं, एक हैं
इन बस्तियों को जगमगाना है सदा
इन खेतियों को लहलहाना है सदा
उठाओ हाथ छोड़ो डर मौत का
कि ज़िन्दगी के गीत गाने है सदा
हम मौत पे हंसने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक है, एक हैं
हम मेहनत करने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम बच्चों की मुस्कान बेचते नहीं
हम मांओं के अरमान बेचते नहीं
हम एटम के इस दौलत के बाज़ार में
हम इन्सानों की जान बेचते नहीं
आज़ादी के मतवाले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक है, एक हैं
हम मेहनत करने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम अजंता और ताज के फ़नकार हैं
हम पेरिस के रोम के श्रृंगार हैं
हम हंसते–गाते कारख़ानों के गीत है
हम चलती–फिरती सड़कों की रफ़्तार हैं
हम जीवन के उजियारें, सब एक है एक हैं
हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक है, एक हैं
हम मेहनत करने वाले सब एक हैं, एक हैं

इप्टा

वो सब कुछ करने को तैयार

वो सब कुछ करने को तैयार
सभी अफ़सर उनके
जेल और सुधार घर उनके
सभी दफ़्तर उनके
वो सब कुछ करने को तैयार
क़ानूनी किताबें उनकी
कारख़ाने हथियारों के
जज और जेलर तक उनके
सभी अफ़सर उनके
वो सब कुछ करने को तैयार
अख़बार, छापेख़ाने
हमें अपना बनाने के
बहाने चुप कराने के
नेता और गुण्डे तक उनके
सभी अफ़सर उनके
वो सब कुछ करने को तैयार
एक दिन ऐसा आएगा
पैसा फिर काम न आएगा
धरा हथियार रह जाएगा
और ये जल्दी ही होगा
ये ढांचा बदल जाएगा

ब्रेख़्त

तोड़ो बन्धन तोड़ो

तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ा बन्धन तोड़ो
हम क्या जाने भारत में भी आया अपना राज
ओ भैया आया अपना राज
आज भी हम भूखे–नंगे हैं आज भी हम मोहताज
ओ भैया आज भी हम मोहताज
रोटी मांगे तो खायें हम लाठी–गोली आज
साम्राज्यवाद की ठोकर में है सारे देश की लाज
ऐ मजदूरों किसानो ऐ दुखियारे इन्सानों
झूठी आशा छोड़ो
तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ा बन्धन तोड़ो

सौ सौ वादे करके हमसे लिए जिन्होंने वोट
औ भैया लिए जिन्होंने वोट
औ बहना लिए जिन्होंने वोट
ग़रीबी हटाओ कह के हमको देते हैं ये चोट
ओ भैया देते हैं ये चोट
नौकरी मांगें नारे मिलते कैसे झूठा राज
शोषण के जूतों से पिसकर रोता भारत आज
ऐ मजदूरों किसानो ऐ दुखियारे इन्सानों
ऐ छात्रों और जवानो, ऐ दुखियारे इन्सानों
झूठी आशा छोड़ो
तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन तोड़ो

इप्टा

संघर्ष हमारा नारा है

हर ज़ोर-ज़ुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है
तुमने मांगे ठुकराई हैं तुमने तोड़ा है हर वादा
छीना हमसे सस्ता अनाज तुम छंटनी पर हो आमादा
लो अपनी भी तैयरी है लो हमने भी ललकारा है

हर ज़ोर-ज़ुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है
मत करो बहाने संकट है घाटा दिखालाना फैशन है
इन बनियों चोर लुटेरों को क्या सरकारी कंसेशन है
बग़ले मत झांको दो जवाब क्या यही स्वराज तुम्हारा है

हर ज़ोर-ज़ुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है
समझौता कैसा समझौता, हमला तो तुमने बोला है
मंहगी ने हमें निगलने को दानव जैसा मुंह खोला है
हम मौत के जबड़े तोड़ेंगे, एका हथियार हमारा है
हर ज़ोर-ज़ुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है

अब संभलें समझौता परस्त जनता को जो करते यतीम
हम सब समझौते बाज़ों को अब अलग करेंगे बीन–बीन
जो रोकेगा बह जाएगा, वो तूफ़ानी धारा है
हर ज़ोर-ज़ुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है

शंकर शैलेन्द्र

तू आ क़दम मिला

ये फ़ैसले का वक़्त है तू आ क़दम मिला
ये इम्तिहान सख़्त है तू आ क़दम मिला
हर दिशा में भोर के सूरज निकल रहे
आस्मां में लाल फरेरे मचल रहे
मुक्ति–कारवां से कारवां मिल रहे
तू बोल किसके साथ है, तू आ ज़रा बता

ये फ़ैसले का वक़्त है तू आ क़दम मिला
क़ैद में पड़ी हुई ज़मीं बुला रही
चीखती हुई ये मशीनें बुला रहीं
बेज़ार बेक़रार हवाएं बुला रहीं
ये जंग–ए–इन्क़लाब है तू आ लहू मिला

ये फ़ैसले का वक़्त है तू आ क़दम मिला
गा रही अंधेरी रात में दिये की लौ
अब जहां से अंधकार को समेट दो
हर ओर ज़िंदगी की रोशनी बिखेर दो
ये ज़िंदगी का गीत है ज़िंदा लबों से गा
ये फ़ैसले का वक़्त है तू आ क़दम मिला

आनन्द क्रांतिवर्धन

बम मारो बम

बम मारो बम
चाहे जनता का निकले दम
भले न महंगाई हो कम
बम मारो बम
फूल रही है बेरोज़गारी
खुश हो गई हे हर बीमारी
जनता रोते–रोते हारी
एटम बम सब का मरहम
बम मारो बम
मिनटों में फूंक दो करोड़
बड़े–बड़ों से कर लो होड़
पांच–पांच बम डालो फोड़
कैसे आंसू किसका ग़म
बम मारो बम
अमरीका की शै है पूरी
ऊपर–ऊपर से ही दूरी
भीतर–भीतर जी हुजुरी
गोरी कम्पनियों को सारे ठेके
देके ठोंक रे हैं ख़म
बम मारो बम
चाहे जनता का निकले दम

रमेश दत्त शर्मा

लड़ो और लड़ाया करो

छोड़ो बम छोड़ो बम चाहे निकले दम
फिर भी बम फोडे जाया करो
कभी हम कभी तुम कभी तुम कभी हम
लडो और लड़ाया करो

संसद की अपनी कुर्सी का हूं मैं अटल रखवाला
कौमी असम्बली के परचम पर मेरा चमकता सितारा
देखो बन गए हम सुपर पावर चलो जश्न मनाया करो

कभी हम कभी तुम, कभी तुम कभी हम
लड़ो और लड़ाया करो
लोग कटें चाहे लोग मरें यारा हमका तो ताज हैं प्यारे
खाने को नहीं है पीने को नहीं है फिर भी बने हम न्यारे
आओ मिलके करें धार्मिक ताण्डव जीवन का नाश करो

कभी हम कभी तुम कभी तुम कभी हम
लड़ो और लड़ाया करो

शीरीं

इन्होंने छोड़ा है बम

भाजपा ने छोड़ा है बम, बम को जय श्रीराम करो
बम को ही खाओ-पिओ बम की ही पूजा करो
पाकिस्तान ने छोड़ा है बम, बम को सलाम करो
बम को ही पहनो-आढ़ो, बम को ही सिजादा करो
ग़रीबी बेरोज़गारी, चाहे रहे हरदम
मंहगाई लूटमारी, चाहे रहे हरदम
हम ने बना कर बम, कर दी समस्या ख़तम
भाजपा ने छोड़ा है बम, बम को जय श्रीराम करो
पाकिस्तान ने छोड़ा है बम, बम को सलाम करो
हिन्द–पाक के किसानो नाचो–गाओ, बम की ही फ़सलें उगाओ
गेहूं–धान सब भूल जाओ, हंडिया में बम ही पकाओ
छोड़ो बीज खाद बिजली, बम से ही पेट भरो
भाजपा ने छोड़ा है बम, बम को जय श्रीराम करो
पाकिस्तान ने छोड़ा है बम, बम को सलाम करो
हिंद–पाक के मजूर नाचो–गाओ, फ़ैक्ट्री में बम ही बनाओ
तनख़्वाह की मांग भूल जाओ, भूखे पेट तुम सो जाओ
तालाबंदी–छंटनी को भूल, बम के ही झूले में झूल
भाजपा ने छोड़ा है बम, बम को जय श्रीराम करो
पाकिस्तान ने छोड़ा है बम, बम को सलाम करो
नौजवानो नाचो–गाओ, नौकरी के सपने भूल जाओ
पोखरन में धुनी रमाओ, बम से डिगरियां जलाओ
बम के ही गाने गाओ, बम की ही गाथा सुनो।
भाजपा ने छोड़ा है बम, बम को जय श्रीराम करो
पाकिस्तान ने छोड़ा है बम, बम को सलाम करो

शीरीं और नीलिमा

जंग के खिलाफ़ उठाओ आवाज़

जंगख़ोर, चारो ओर, हो रहे हैं तैयार
कर रहे वार वे शांति के द्वार पर
कमर कसो हो तैयार मिलके उठाओ आवाज़

उठाओ आवाज़ जंग नहीं, जंग नहीं, उठाओ आवाज़
महलो की जगमगाती रोशनी और न झिलमिलाए
ख़ूंख़ार सांप अपना फन कभी उठा न पाए
बीसवीं सदी को देखो जंग से छिन्न–भिन्न आज

उठाओ आवाज़ जंग नहीं, जंग नहीं, उठाओ आवाज़
हमलावार बाज़ आज ख़ून की तलाश में
प्यार प्रीत चैन–अमन मिटाने के जुनून में
मुस्कुराते बच्चों के हरे–भरे जहान में
उठा धुंआ बारूद का हवा में असमान में
जंग नहीं, जंग नहीं, एकता का छेड़ा साज
उठाओ आवाज़ जंग नहीं, जंग नहीं, उठाओ आवाज़

मन्दिर भी ले लो मस्जिद भी ले लो

मंदिर भी ले लो मस्जिद भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो
मंदिर से गर जो खुदा है नदारद
मस्जिद में गर जो ईश्वर नहीं है
तो फिर आदमी के लिए धर्म क्या है
जहां क़त्ल करने को उठते हैं खंजर
खुदा को भी ले लो ईश्वर भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

ये किसके इशारे ये किसके शरारत
ये किस नींव पर उठ रही है ईमारत
ये दो भाइयों को लड़ाते–लड़ाते
कहां ले के आयी है देखो सियासत
वोटें भी ले लो, कुर्सी भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

जहां चाहिए सर पे छत आदमी को
वहां उठ रहा है धुआं आसमां से
जहां भूख को रोटियों की ज़रूरत
वहां बंट रही हैं जातियां किस दुकां से
तुम राम ले लो, बाबर भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

हमें चाहिए न अंधेरा तुम्हारा
हमें चाहिए न सियासत तुम्हारी
हमें चाहिए ज़िंदगी का उजाला
हमें चाहिए सिर्फ़ दुनिया हमारी
मंदिर भी ले लो मस्जिद भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

ब्रजमोहन

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने बांट लिया भगवान को

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने बांट लिया भगवान को
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को

हिंदू कहता मंदिर मेरा, मंदिर मेरा धाम है
मुस्लिम कहता मक्का मेरा, अल्लाह का ईमान है
दोनो लड़ते लड़–लड़ मरते, लड़ते–लड़ते ख़तम हुए
दोनों ने एक दूजे पे न जाने क्या–क्या जुल्म किये
किसका ये मक़सद है और किसकी चाल है जान लो
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को

नेता ने सत्ता की ख़ातिर क़ौमवाद से काम लिया
धरम के ठेकेदार से मिलकर लोगों को नाकाम किया
भाई बंटे टुकड़े–टुकड़े में नेता का ईमान बटा
वोट मिले नेता जीता शोषण को आधार मिला
वक़्त नहीं बीता है अब भी वक़्त की कीमत जान लो
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को

प्रजातंत्र में प्रजा को लूटे ये कैसी सरकार है
लाठी गोली ईश्वर अल्लाह ये सारे हथियार हैं
इनसे बचो और बच के रहो और लड़ कर इन छीन लो
हक़ है तुम्हारा चैन से रहना, अपने हक़ को छीन लो
अगर हो तुम शैतानी से तंग, ख़त्म करो शैतान को
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को

विनय महाजन

इंसान अभी तक ज़िंदा है

इंसान अभी तक ज़िंदा है,
ज़िंदा होने पर शर्मिन्दा है
ओ मुफ़्ती, मुल्ला, काज़ी जी
क्यों मुर्ग़ी मांगो ताज़ी जी
बासी पर क्यों नहीं राज़ी जी
क्या उसका अण्ड गंदा है
इंसान अभी तक ज़िंदा है,
ज़िंदा होने पर शर्मिन्दा है
पेट भरे न वाजो से
वक़्त बेवक़्त नमाज़ों से
बचो बचो रंगबाज़ों से
इनका शैतानी धंधा है
इंसान अभी तक ज़िंदा है,
ज़िंदा होने पर शर्मिन्दा है
मालिक से कोड़े खाते हैं
और फिर भी दौड़े जाते है
सच कहने से घबराते हैं
फांसी का गले में फंदा है
इंसान अभी तक ज़िंदा है,
ज़िंदा होने पर शर्मिन्दा है

शाहिद नदीम

(यह गीत पाकिस्तान में जनपक्षीय सांस्कृतिकर्मी धार्मिक कठमुल्लावाद के ख़िलाफ़ खुलेआम गाते हैं)

इंसान अभी तक ज़िंदा है

इंसान अभी तक ज़िंदा है
ज़िंदा होने पर शर्मिंदा है
अरे नेता, पंडित, मुल्ला जी
दंगों पर क्यों हो राज़ी जी
क्यों लाशें चाहो ताज़ी जी
क्या धर्म का मतब दंगा है
इंसान अभी तक ज़िंदा है
ज़िंदा होने पर शर्मिन्दा है
पेट भरे न नमाज़ों से
भजनों और जगरातों से
बचो बचो रंगबाज़ों से
इनका शैतानी धंधा है
इंसान अभी तक ज़िंदा है
ज़िंदा होने पर शर्मिन्दा है
ज़ालिम से कोड़े खाते हैं
और फिर भी दौड़े जाते हैं
सच कहने से घब्राते हैं
फांसी का गले में फंदा है
इंसान अभी तक ज़िंदा है
ज़िंदा होन पर शर्मिन्दा है

(शाहिद नदीम का गीत जिसे भारतीय हालात के मुताबिक़ शीरीं द्वारा ढाला गया है)

गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए

गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए
इस दौरे सियासत का अंधेरा मिटाइए

जुल्म–ओ–सितम की आग लगी है यहां–वहां
पानी से नहीं आग[1] से इसको बुझाइए
गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए

बस कीजिए आकाश में नारे उछालना
ये जंग है इस जंग में ताक़त लगाइए
गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए

क्यों कर रहे हैं आंधियां रूकने का इंतज़ार
आइए हमारे कांधे से कांधा मिलाइए
गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए

नफ़रत फैला रहे हैं ये मज़हब के नाम पर
सत्ता के भूखे लोगों में मज़हब बचाइए

गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए
इस दौरे सियासत का अंधेरा मिटाइए

अज्ञात

1. आग की जगह प्यार शब्द भी गाया जा सकता है

सत्ता में बैठे हैं देखो लोगों के हत्यारे

सत्ता में बैठे हैं देखो लोगों के हत्यारे
हाथ रंगे हैं इनके ख़ून में सारे
मुंह में राम, बगल में छुरी
संघी ये बजरंगी टोली
झंडे पे फूल है हाथ में चाकू
सेवक खुद को बोलें ये ख़ूनी
उपवास पे बैठे गांधी के हत्यारे
लोगों के हत्यारे
सत्ता में बैठे हैं देखो लोगों के हत्यारे
हाथ रंगे हैं इनके ख़ून में सारे

गिरिजा गिराएं और मस्जिद ढाएं
मंदिर भी इनके हाथों से बच नहीं पाएं
बच्चों को जला के कमीशन ये बिठाएं
दंगे ये भड़का के फिर जांच कराएं
गांधी को मरवा के उपवास पे जाएं
सौ–सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली
हज को चली
सत्ता में बैठे हैं देखो लोगों के हत्यारे
हाथ रंगे हैं इनके ख़ून में सारे

शीरीं

वो हमारी एकता तोड़ना चाहते हैं

वो हमारी एकता तोड़ना चाहते हैं
ख़ामोशी तोड़ो समय की मांग है
लाठी और त्रिशूल से दबाना चाहते हैं
हमें वो,
लाठी और त्रिशूल से दबाना चाहते हैं
ख़ामोशी तोड़ो समय की मांग है
वो हमारी एकता तोड़ना चाहते हैं
चर्च और मस्जिदें गिराना चाहते हैं
यहां वो,
चर्च और मस्जिदें गिराना चाहते हैं
ख़ामोशी तोड़ो समय की मांग है
इतिहास को गेरूआ बनाना चाहते हैं
यहां वो
इतिहास को गेरूआ बनाना चाहते हैं
ख़ामोशी तोड़ो समय की मांग है
वो हमारी आवाज़ दबाना चाहते हैं
यहां वो
हमारी आवाज़ दबाना चाहते हैं
ख़ामोशी तोड़ो समय की मांग है
धर्म निरपेक्षता बचाना चाहते हो
अगर तुम,
धर्मनिरपेक्ष बचाना चाहते हो
ख़ामोशी तोड़ो समय की मांग है
वो हमारी एकता तोड़ना चाहते हैं

शीरीं

चार दीवारी में घुटकर के नहीं जीना है

बदलो ऐसी दुनिया जिसका पत्थर का सीना है
चारी दीवारी में घुटकर के नहीं जीना है
दुनिया बनाने में हमारा भी तो पसीना है

हमको तो बस सहने का ही पाठ पढ़ाया जाता
और शुरु से ही हमको कमज़ोर बनाया जाता
दुख में डूबा क्यों आख़िर हरेक महीना है
दुनिया बनाने में हमारा भी तो पसीना है

हम भी तो मां बाप के आंगन की हैं ठंडी छांव
चलने पर जलते हैं लेकिन सिर्फ़ हमारे पांव
हंसने का भी हक़ ये हमसे, किसने छीना है
दुनिया बनाने में हमारा भी तो पसीना है

किसने लिक्खा है क़िस्मत में सिर्फ़ हमारी रोना
क्यों जीवन भर पड़ता आख़िर हमको सब कुछ खोना
ज़हर सभी के हिस्से का हमको नहीं पीना है
दुनिया बनाने में हमारा भी तो पसीना है

अपनी–अपनी मर्ज़ी से ये कौन चलाता हमको
ज़ुल्म से लड़ने के बदले में कौन जलाता हमको
बदलो ऐसी दुनिया जिसका पत्थर का सीना है
चारी दीवारी में घुटकर के नहीं जीना है
दुनिया बनाने में हमारा भी तो पसीना है

ब्रजमोहन

मुंह सी के अब जी न पाऊंगी

मुंह सी के अब जी न पाऊंगी
ज़रा सब से यह कह दो
अपना मैं मान बढ़ाऊंगी
ज़रा सबसे कह यह कह दो
भैया कहे बहना चौखट न लाघो
चार दीवारी को गिराऊंगी
ज़रा सबसे यह कह दो
बापू कहे बिटिया पढ़ने न जाना
अपना मैं ज्ञान बढ़ाऊंगी
ज़रा सबसे यह कह दो
अम्मा कहे बिटिया शीश झुकाना
सर को मैं ऊंचा उठाऊंगी
ज़रा सबसे यह कह दो
शास्त्र कहे पति है स्वामी
अब न गुलामी कर पाऊंगी
ज़रा सब से यह कह दो
रिश्ते बराबर के बनाऊंगी
ज़रा सबसे यह कह दो
मुंह सी के अब जी न पाऊंगी
ज़रा सब से यह कह दो

कमला भसीन

ले मशालें चल पड़ीं मज़दूर बहनें देखिये

ले मशालें चल पड़ीं मज़दूर बहनें देखिये
अब अन्धेरा जीत लेंगीं मिल के बहनें देखिये
रोशनी आंखों को दी, सेहत भी दी और जान भी
झूलती हैं ज़िन्दगी और मौत के दरम्यान ही
अपनी मेहनत अपने फ़न को दो टकों में बेचकर
बेबस हो कर भर रहीं औरों के कोठे, उनके घर

ले मशालें चल पड़ीं मज़दूर बहनें देखिये
अब अन्धेरा जीत लेंगीं मिल के बहनें देखिये
पेट हमारा काटकर सेठों की कोठी हो गई
झोंपड़ी अपनी मगर पहले से छोटी हो गई
सदियों से ग़ैरों के कपड़ों को सजाती आ रहीं
मिल के अब हम ज़िन्दगी अपनी बनाने जा रहीं
जुल्म अब मिट जायगा चिकनकारी के बाज़ार में
अब इकट्ठी हो चलीं मजदूर बहनें देखिये

ले मशालें चल पड़ीं मज़दूर बहनें देखिये
अब अन्धेरा जीत लेंगी मिल के बहनें देखिये

(बल्ली सिंह चीमा के गीत 'ले मशालें' पर आधारित, लखनऊ और उसके आसपास के इलाकों में चिकनकारी से जुड़ी शोषण झेलती बहनों का तराना)

कमला भसीन

अब ज़ुल्म का ज़माना बीतेगा

अब ज़ुल्म का ज़माना बीतेगा रे बीतेगा
अब ज़ुल्म का ज़माना बीतेगा
गंगा मैया को जमुना मैया को
सागर से मिलना न पड़े
किसी लड़की को, किसी भी मां को
मर्दों से डरना ना पड़े

अब ज़ुल्म का ज़माना बीतेगा रे बीतेगा
अब ज़ुल्म का ज़माना बीतेगा
इस धरती पर हम औरतों को
बेड़ियों में बंधना ना पड़े
मर्दों के संग हर औरत को
मेहनत करने का हक़ मिले

अब ज़ुल्म का ज़माना बीतेगा रे बीतेगा
अब ज़ुल्म का ज़माना बीतेगा

माधव चव्हाण

तू खुद को बदल

दरिया की क़सम मौजों की क़सम
ये ताना बाना बदलेगा
तू खुद को बदल तू खुद को बदल
तब ही तो ज़माना बदलेगा
तू चुप रह कर जो सहती रही
तो क्या ये ज़माना बदला है
तू बोलेगी मुंह खोलेगी
तब ही तो ज़माना बदलेगा
दस्तूर पुराने सदियों के
ये आये कहां से क्यों आये
कुछ तो सोचो कुछ तो समझो
ये क्यों तुने हैं अपनाये
ये पर्दा तुम्हारा कैसा है
क्या ये मज़हब का हिस्सा है
कैसा मज़हब किसका पर्दा
ये सब मर्दों का क़िस्सा है
आवाज़ उठा क़दमों को मिला
रफ़्तार ज़रा कुछ और बढ़ा
मशरिक़ से उठो मग़रिब से उठो
उत्तर से उठो दक्षिण से उठो
फिर सारा ज़माना बदलेगा
दरिया की क़सम मौजों की क़सम
ये ताना बाना बदलेगा
तू खुद को बदल तू खुद को बदल
तब ही तो ज़माना बदलेगा

(हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की महिलाओं द्वारा एक वर्कशाप में रचित गीत)

पर लगा लिये हैं हमने

पर लगा लिये हैं हमने
अब पिन्जरों में कौन बैठेगा ज़रा सुन लो
जब तोड़ दी हैं जंजीरें
तो कामयाब हो जायेंगे
खड़े हो गये हैं मिल के
तो हमको कौन रोकेगा ज़रा सुन लो

दीवारें तोड़ दीं हमने
अब खुल कर सांस लेंगे जरा सुन लो
औरों की ही मानी अब तक
अब ख़ुदी को बुलन्द करेंगे ज़रा सुनलो
देखो सुलग उठी है चिन्गारी
अब जुल्मों की शामत आई है ज़रा सुन लो
मर्दों के बनाये कानून
अब हमको मन्जूर नहीं
अब पिन्जरों में कौन बैठेगा ज़रा सुन लो
पर लगा लिये हैं हमने

कमला भसीन

मेहनतकश मज़दूर क्यों हम हैं इतने मजबूर

ग़रीब हमारी ज़िन्दगी हम मेहनतकश मज़दूर
मेहनतकश मज़दूर क्यों हम हैं इतने मजबूर

हाय रे सरकार हमारी ने वादे किये हज़ार
वादे किये हज़ार लगाई मंहगाई की मार
सरकार के कहने से हमने छोटा किया परिवार
पर इस छोटे परिवार का भी पड़ता नहीं है पार
वोट के टाइम पे वादे किये कि सस्ता करेंगे अनाज
पर राशन की दुकान पे बढ़ गया इतना ऊंचा दाम
महंगाई का पिटा ढिंढोरा मारे गये ग़रीब आवाम
ग़रीब हमारी ज़िन्दगी हम मेहनतकश मज़दूर
मेहनतकश मज़दूर क्यों हम हैं इतने मजबूर

अमीरों के लिये फ़िएट, मरूति ऐश और आराम
ग़रीबां के लिए बस चलाई उसके भी बढ़ाये दाम
हमारे लाखों वोट से बन गये नेता और प्रधान
हम ही सब मर जायेंगे तो किस पर करोगे राज
काम से थक कर लौटते मन में उठती एक ही बात
किसको खिलाऊं किसको मारूं भूखा आज की रात
महंगाई को ख़तम करो और रोको भ्रष्टाचार
रोको अत्याचार नहीं तो बदलेंगे सरकार
ग़रीब हमारी ज़िन्दगी हम मेहनतकश मज़दूर
मेहनतकश मज़दूर क्यों हम हैं इतने मजबूर

शांति, सुशीला और आभा

कौन कहता है जन्नत इसे

कौन कहता है जन्नत इसे
हम से पूछो जो घर में फंसे

न हिफ़ाज़त न इज़्ज़त मिली
करके कुर्बानी हम मर गये
दुश्मनों की ज़रूरत किसे
जुल्म अपनों ने हम पे किये
हमने हर शै संवारी मगर
खुद हम बदरंग होते गये
अपने हाथों बनाया जिन्हें
हाथ उनके ही हम पर उठे
घर के अंदर ही गर मिटाना है
तो सम्भालो ये घर हम चले
जिसमें दिन रात औरत जले
ऐसे घर से हम बेघर भले

कौन कहता है जन्नत इसे
हम से पूछो जो घर में फंसे

कमला भसीन

देश की बेटियां

देश में गर बेटियां अपमानित हैं नाशाद हैं
दिल पे रख कर हाथ कहिये देश क्या आज़ाद है
जिनका पैदा होना ही अपशकुन है नापाक है
औरतों की ज़िन्दगी ये ज़िन्दगी क्या ख़ाक है
बेटा हो पैदा तो घर में ख़ूब ही ख़ुशियां मनें
कोसी जायें मायें वो ग़लती से जो बेटी जनें
बेटे को दीपक कहें, राजा कहें, सम्मान दें
बस चले तो बेटियों को जान से ही मार दें
अपनी मां ही बेटियों को सब से कम परोसा करे
अपने ही आंगन में वो इन्साफ़ को तरसा करे
बेटी वो पौधा है जिसको रोशनी न जल मिले
ऐसा है वो फूल जो खिल सकता है पर न खिले
चूल्हा चौका चारदीवारी बचपन में सौंपे गये
ढेर ज़िम्मेदारियों के जबरन ही थोपे गये
क्या है बचपन, क्या शैतानी और नादानी है क्या
बेटियां न जान पाईं मौज के मानी हैं क्या
न ये बोलें, न ये डोलें, मन की कुछ न कर सकें
काटे गये हैं पंख इनके ऊंची ये न उठ सकें
आधी सेहत, आधी शिक्षा, मज़दूरी आधी मिली
देश हुआ आज़ाद पर इनको न आज़ादी मिली
चेहरा फीका नज़रें नीचे कैसे ये बुझ सी गईं
ये न हों रोशन तो होगा कोई घर रोशन नहीं
देश में गर बेटियां अपमानित हैं नाशाद हैं
दिल पे रख कर हाथ कहिये देश क्या आज़ाद है

कमला भसीन

आ गये यहां जवां क़दम

आ गये यहां जवां क़दम मंज़िलों को ढूंढते हुए
गीत गा रहे है आज हम रागिनी को ढूंढते हुए

दो दिलों में ये उमंग है ये जहां नया बसाएंगे
ज़िन्दगी का तौर आज से दोस्तों को हम सिखाएंगे
फूल दो नए खिलाएंगे ताज़गी को ढूंढते हुए
आ गये यहां जवां क़दम मंज़िलों को ढूंढते हुए
गीत गा रहे है आज हम रागिनी को ढूंढते हुए

कोढ़ की तरह दहेज है आज देश के समाज में
है तबाह आज आदमी लूट पर टिके समाज में
हम समाज भी बनाएंगे आदमी को ढूंढते हुए
आ गये यहां जवां क़दम मंज़िलों को ढूंढते हुए
गीत गा रहे है आज हम रागिनी को ढूंढते हुए

फिर न रो सके कोई दुल्हन ज़ोर–ज़ुल्म का न हो निशां
मुस्करा उठे धरा–गगन हम रचेंगे ऐसी दास्तां
यूं सजाएंगे वतन को हम हर ख़ुशी को ढूंढते हुए
आ गये यहां जवां क़दम मंज़िलों को ढूंढते हुए
गीत गा रहे है आज हम रागिनी को ढूंढते हुए

भुवनेश्वर

अपना दिन हम मनायें तो बड़ा मज़ा आये

अपना दिन हम मनायें तो बड़ा मज़ा आये
सखियां मिलजुल गायें तो बड़ा मज़ा आये
मौज मस्ती मनायें तो बड़ा मज़ा आये
संग सखियन हम मेले मनायें
अपने जीवन में रौनक़ बढ़ायें
चूल्हा चौका भुलायें तो बड़ा मज़ा आये
अपना दिन हम मनायें तो बड़ा मज़ा आये
सखियां मिलजुल गायें तो बड़ा मज़ा आये
संग सखियन हम पींगें चढ़ायें
सारे पिंजरों से पीछा छुड़ायें
हम भी पर फैलायें तो बड़ा मज़ा आये
हम सब ऊंची उड़ पायें तो बड़ा मज़ा आये
अपना दिन हम मनायें तो बड़ा मज़ा आये
सखियां मिलजुल गायें तो बड़ा मज़ा आये
संग सखियन नये कानून बनायें
हक़ बराबर के सब को दिलायें
जायदाद बेटी भी पाये तो बड़ा मज़ा आये
बिटिया मालिक बन जाए तो बड़ा मज़ा आए
अपना दिन हम मनायें तो बड़ा मज़ा आये
सखियां मिलजुल गायें तो बड़ा मज़ा आये
संग सखियन नये धरम बनाएं
करवा चौथ बलम भी मनायें
सजनवा मांग भर ले तो बड़ा मज़ा आये
पैसा कमाने नौकरिया पे जायें
थककर जब घर वापिस आयें
बलम खाना खिलायें तो बड़ा मज़ा आये
अपना दिन हम मनायें तो बड़ा मज़ा आये
सखियां मिलजुल गायें तो बड़ा मज़ा आये

कमला भसीन

इसलिए पढ़ो कि जुल्म का किला ढहा सको

किसलिए पढ़ें–लिखें, किसलिए हों साक्षर
क्या मिलेगा पढ़के जबकि खत्म हो रही उमर

इसलिए पढ़ो कि खत्म हो नहीं रहा जहां
इसलिए पढ़ो कि पढ़के तुम रहो न बेजुबां
इसलिए पढ़ो कि अंधकार को जला सको
इसलिए पढ़ो कि जुल्म का क़िला ढहा सको
किसलिए पढ़ें-लिखें, किसलिए हों साक्षर

इसलिए पढ़ो कि खुशबुओं को तुम बचा सको
इसलिए पढ़ो हरेक फूल को खिला सको
इसलिए पढ़ो कि तुम भी अपने गीत गा सको
इसलिए पढ़ो कि तुम भी अपना सर उठा सको
किसलिए पढ़ें-लिखें, किसलिए हों साक्षर

इसलिए पढ़ो कि पढ़के जान लो हुआ क्या
क्या तुम्हारा था यहां मगर तुम्हें मिला है क्या
इसलिए पढ़ो कि कोई हाथ काट पाए न
इसलिए पढ़ो कि तुमको कोई भी खलाए न
किसलिए पढ़ें-लिखें, किसलिए हों साक्षर

इसलिए पढ़ो कि भूख के खिलाफ लड़ सको
इसलिए पढ़ो के जुल्म की किताब पढ़ सको
इसलिए पढ़ो कि अपने पांव आप चल सको
इसलिए पढ़ो कि तुम भी जिन्दगी बदल सको
किसलिए पढ़ें-लिखें, किसलिए हों साक्षर

ब्रजमोहन

बाहर बस न चले कोई तो

बाहर बस न चले कोई तो
चल औरत को मारें घर में
अपनी सारी खिसियाहट को
औरत पे उतारें घर में
चल औरत को मारें घर में

इससे बढ़ती शान,
मूंछ के बाल खड़े रहते हैं
बाहर कद कितना हो छोटा
घर में बड़े रहते हैं
आसमान सर पे रख दिन में
ही दिखला दें तारे घर में
चल औरत को मारें घर में

बाहर जितने धक्के खाएं
घर में उतने अकड़ें
बाहर कुछ न हाथ लगे
बीवी की चोटी पकड़ें
कंगाली का पीकर ठर्रा
अपनी शान बघारें घर में
चल औरत को मारें घर में

आंख पे पट्टी बांधी हमने
जो चाहे सो लूटे
भाड़ में जाए दुनियां और घर
नशा न अपना टूटे
बच्चों की हर एक खुशी के
बन जाए हत्यारे घर में
चल औरत को मारें घर में

ब्रजमोहन

गुलमिया अब हम नाहिं बजाइबो

गुलमिया अब हम नाहिं बजाइबो, अजदिया हमरा के भावेला
झीनी–झीनी बीनी चदरिया लहरेले तोहरे कान्हे
जब हम तन के परदा मांगे, आवे सिपहिया बान्हे
सिपहिया से अब नाहिं बन्हइबो, चदरिया हमरा के भावले
गुलमिया अब हम नाहिं बजाइबो, अजदिया हमरा के भावेला

कंकड़ चुनी–२ महल बनावली, हम भइली परदेसी
तोहरे कनुनिया मारल गइली, कबहों भइले न पेसी
कनुनिया अइसन हम नाहिं मनिबो, महलिया हमारा के भावेले गुलमिया
गुलमिया अब हम नाहिं बजाइबो अजदिया हमरा के भावेला

दिनवां खदनवां से सोना निकलली, रतिया लगवलीं अंगूठा
सगरो जिनगिया करजे में डूबल, कईल हिसबवा झूठा
जिनगिया अब हम नाहिं डुबाइबो, अछरिया हमरा के भावेले
गुलमिया अब हम नाहिं बजाइबो, अजदिया हमरा के भावेला

हमारे जंगरवा से धरती फुलाइल, फुलवा में खुसबू भरेले
हम के बनुकिया से कईल बेदखली, तोहरे मलिकई चलेले
धरतिया अब हम नाहिं गवईबो, बनुकिया हमरा के भावेले
गुलमिया अब हम नाहिं बजाइबो, अजदिया हमरा के भावेला

गोरख पाण्डेय

समाजवाद

समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई
हाथी से आई
घोड़ा से आई
अंग्रेजी बाजा बजाई
समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई
आंधी से आई
गांधी से आई
बिरला के घर में समाई
समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई
नोटवा से आई
वोटवा से आई
कुर्सी के बदली हो जाई
समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई
कांग्रेस से आई
भाजपा से आई
झंडा के बदली हो जाई
समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई
रूबल से आई
डालर से आई
देसवा के बान्हे धराई
समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई

गोरख पाण्डेय

पहिल-पहल जब वोट मांगे अइलें त बोले लगले ना

पहिल-पहल जब वोट मांगे अइलें त बोले लगले ना
तोहके खेतवा दिइअबों
ओ में फसलि उगइबो उत बोले लगले ना
बजड़ा की रोटिया में देई–देई नूनवां
सोचली कि अब त बदली कनूनवा
अब जमींदारवा के पनही न सहबो
दूसरे चुनउआ में जब ऊपरइलें त बोले लगले ना
तोहके कूइंयां खोनइवो, कुल प्यासिया मिटइवो
ईहवां से उड़ि–उड़ि ऊहां जब गइले
सोचलीं जमिनियां के बतियां भुलइले
हमनी के धीरे से जो मनवा परवलीं
जोर से कनूनिया कनूनिया चिलइलीं
तीसरे चुनउआ में चेहरा दिखइलें त बोले लगले ना
तोहके महली उठाइबो ओमे बिजुरी लगइबो
चमकलि बिजुरी त गोसंया दुअरिया
हमरी झोंपड़िया में गहरे अन्हरिया
सोचली कि अब तक जेके जेके चुनिलि
हमके बनावे सब काठ के पुतरिया
अबकी टपकीहें त कहबो कि देख तूं बहुत कइले ना
तो के अब न थकाइबो आपन हथवा उठाइबो
हथवा में हमरे फसलिया भरलिबा
हथवा में हमरे लहरिया भरलिबा
ऐही हथवा से देस दुनियां में सगरी
लूट के किलन पै बिजुरिया गिरलिबा
जब हम इहबों के किलवा ढहाइबो त ऐही हाथे ना
ताहरो मटिया मिलइबो, आपन रजवा बनइबो
तो ऐही हाथे ना
पहिल-पहल जब वोट मांगे अइलें त बोले लगले ना

गोरख पाण्डेय

बदरा करेला गोहार हो

बदरा करेला गोहार हो, तजि आवा भवनवा
देसवा पियासल हमार हो, तजि आवा भवनवा

खेत बन बागन के सींचेला बदरा
रात–दिन देस–देस घूमेला बदरा
बरसेला सबका मोहार हो, तजि आवा भवनवा
बदरा करेला गोहार हो, तजि आवा भवनवा

बरसेला पानी त लहरे फसलिया
दाना से सेठन क भरल अटरिया
लरिका भुखाइल तोहार हो, तजि आवा भवनवा
बदरा करेला गोहार हो, तजि आवा भवनवा

चूसेला सेठवा कमकर के खूनवा
थाना–कचहरी पे सेठन के सुनवा
लूटे विदेशी सरकार हो, तजि आवा भवनवा
बदरा करेला गोहार हो, तजि आवा भवनवा

कमकर के सागर से बादर बनावा
सैठन लुटेरन पै बिजुरी गिरावा
बरसा तु मुसलाधार हो, तजि आवा भवनवा
बदरा करेला गोहार हो, तजि आवा भवनवा

ओमप्रकाश मिश्र

डाला रंग में भंग रे साथी

डाला रंग में भंग रे साथी डाला रंग में भंग
केकरे हाथे कनक पिचकारी
केकरे हाथे बा रंग
डाला रंग में भंग रे साथी डाला रंग में भंग

सेठन के हाथे कनक पिचकारी
नेतन के हाथे बा रंग
अरे नेतन के हाथे बा रंग
डाला रंग में भंग रे साथी डाला रंग में भंग

अपना के महल–दुमहला उठवलस
हमनी के टुटही मड़इया थमवलस
कईलस जिनिगिया तंग
अरे कईलस जिनिगिया तंग
डाला रंग में भंग रे साथी डाला रंग में भंग

बड़की–बड़की बात बतिआई
जैसे चुनाई ओही के खाई
छोड़ो गुलामी छेड़ो जंग
अरे छोड़ो गुलामी छेड़ो जंग
डाला रंग में भंग रे साथी डाला रंग में भंग

अज्ञात

लोगवा जल बिच मरत पिआसा

लोगवा जल बिच मरत पिआसा, लोगवा जल बिच मरत पिआसा
ब्रिटिश के देखली, कांग्रेस[1] के देखली, एकरो से नाही अब आसा
लोगवा जल बिच मरत पिआसा, लोगवा जल बिच मरत पिआसा
ई धरती मोर सोन की चिरिया, जुगल से लागल कासा
अइसन रहित समइया भइया, जल्दी ही होई ए नासा
लोगवा जल बिच मरत पिआसा, लोगवा जल बिच मरत पिआसा

हार साल बाढ़ में देस बहाला तब नेता देले आसा
लीटर, मीटर, किलो में बटाला, अगबढ़ फेकल पासा
लोगवा जल बिच मरत पिआसा, लोगवा जल बिच मरत पिआसा

हमरा नावे बहुत कुछ होला, खूब लगावे लासा
ई पूंजीवादी धोखा से मिटे नाहीं भूख–पिआसा
लोगवा जल बिच मरत पिआसा, लोगवा जल बिच मरत पिआसा

खून पसीना एक करीला तब्बो होएला उपासा
कबई धरती सरग बनी की, गइती बारह मासा
लोगवा जल बिच मरत पिआसा, लोगवा जल बिच मरत पिआसा

लोग खोजेला राम राज के कि दूर होई भूख–पिआसा
बिन महाभारत दूर न होई हैं ऐही के बाटे आसा
लोगवा जल बिच मरत पिआसा, लोगवा जल बिच मरत पिआसा

कवि विनय

1. यहां सत्तासीन पार्टी का नाम दिया जा सकता है

सब कुछ पूंजीपतियां का भाई यौ कहणा सै मेरा

सुण साथी तनै बात बताऊं ना भारत में कुछ तेरा
सब कुछ पूंजीपतियां का भाई यौ कहणा सै मेरा

दफ्तर, अफसर और अदालत, कारखन्ने हथियारां के
थाने, पलटन, पुलिस और गुण्डे सारे साहूकारां के
जालिम की जूती–लाठी तै यो पिटता आज कमेरा
सब कुछ पूंजीपतियां का भाई यौ कहणा सै मेरा

संविधान और धरम–शास्तर फादया करैं अमीरां का
नेता, महाजन और पुजारी यो ढोंग रचें तकदीरा का
सेठ–मंत्री और पुजारी लूटें सै म्हारा डेरा
सब कुछ पूंजीपतियां का भाई यौ कहणा सै मेरा

म्हारे पै चलै केस कानूनी यो शोषक सै कानून पै
जज और जेलर जुल्म करें भई भूखे और मासूम पै
अखबार, रेडियो, टेलीविजन कब्जा रह्या लुटेरा
सब कुछ पूंजीपतियां का भाई यौ कहणा सै मेरा

करदे फादया यो संसद रे मतना रहयो धोखे मै
करो एकता, लड़ो लड़ाई जो मिल जा रोटी भूखे नै
कह श्रमिक कर दूर अंधेरे नै कर दो लाल सवेरा
सब कुछ पूंजीपतियां का भाई यौ कहणा सै मेरा

सतबीर श्रमिक

हिन्दू, मुस्लिम कोए नहीं मजदूर कौम से म्हारी

रहग्ये आपस में लड़ते हम कोन्या बात बिचारी
हिन्दू, मुस्लिम कोए नहीं मजदूर कौम से म्हारी

ज्यूं गोरे नै भेदकरा था, हिन्दू–मुस्लिम का भाई
न्यू ये मोटे–मोटे चाहवें, हम आपस में करैं लड़ाई
हमें लड़ा के जात–पात पे ये लूटैं माया म्हारी
हिन्दू, मुस्लिम कोए नहीं मजदूर कौम से म्हारी

ऊंच–नीच का भेद करो मत मेहनत करने आले हम
इस दुनिया को पैदा करके रोटी देने आले हम
एक जात से काम करिण्या की एक सै जात लुटैरी
हिन्दू, मुस्लिम कोए नहीं मजदूर कौम से म्हारी

जो रहे आपस में लड़ते यो शोषक जिंदा रह जागा
म्हारी आपस की कमजोरी का यो जालिम फादया ठा जागा
असली दुश्मन पै ध्यान धरो और बात छोड़ दो सारी
हिन्दू, मुस्लिम कोए नहीं मजदूर कौम से म्हारी

फूट गेर कै राज करो न्यूं पूंजीपति चाहवैं सै
म्हारी मेहनत का खाके ऊपर तै रौब जमावैं सै
कह श्रमिक कर एक्का, उसतै करो लड़ाई जारी
हिन्दू, मुस्लिम कोए नहीं मजदूर कौम से म्हारी

सतबीर श्रमिक

बेरूजगारी का गीत

बेरूजगारी बड़ी बिमार फैली बीच हमारे
पढ़े-लिखे भी भारत के म्हां हाण्डैं मारे-मारे

बारा की औकात कड़े जिब बीए–एमए रौवैं सै
काट काट दफ्तर के चक्कर आके भूखे सौवें सै
खोया सै न्युए पढ़के पईसा, बात जाणगे सारे
पढ़े-लिखे भी भारत के म्हां हाण्डैं मारे-मारे

मंत्रियां ने बजह बताई जनसंख्या बेकारी की
असल जड़ सरमाएदारी पाई इस बीमारी की
इस्से कारण हुई महंगाई दिक्खें दिन में तारे
पढ़े-लिखे भी भारत के म्हां हाण्डैं मारे-मारे

भूक्खे–प्यासे मात–पिता रह म्हारी फीस पुगावैं सै
सोच्चैं बेट्टा बणेगा अफसर आस घणी वे लावैं सै
जित जां पहलां मांगै रिश्वत, मीट अर बोतल न्यारे
पढ़े-लिखे भी भारत के म्हां हाण्डैं मारे-मारे

हल हो जा यो बेकारी जो मिल के हम संघर्ष करैं
तोड़ के ढांच्या गला–सड़ा यो अच्छे की जो नींव धरैं
कह श्रमिक हों सूखी जो मिट जां ये शोषक हत्यारे
पढ़े-लिखे भी भारत के म्हां हाण्डैं मारे-मारे

सतबीर श्रमिक

एक दिन वो भी आवैगा

हो एक दिन वो भी आवैगा
ना रहगा कोई ठाली ना कोई भूखा सोवैगा
हो एक दिन वो भी आवैगा
समाजवाद में सुखी रहैं उधारण म्हारे सामने सै
पूंजीपति उनके लीडर भारत में नहीं थामणे सै
शोषक, देशी और विदेशी सारे ही भजावणे सै
मेहनतकश म्हारी आजादी का बिगुल बजावैगा
हो एक दिन वो भी आवैगा
अत्याचारी मारे जांगे मेहनतकश का राज होगा
हरामखोर के जूते लागैं मेहनत के सर ताज होगा
रोटी कपडे और दवा बिन कोई ना माहताज होगा
काम करैगा जो बोहे मजदूरी पावैगा
हो एक दिन वो भी आवैगा
मिल मजदूरां के हो जांगे, खेतों पै किसाण होंगे
शिक्षा, न्याय और चिकित्सा सबक लिए समान होंगे
सबको मिल ज्या रोजी रोटी ऐसे सबके ध्यान होंगे
एक-दुजे के हक नै खाणा ना कोई चावैगा
हो एक दिन वो भी आवैगा
धरम–जात का भेद रहै न ऐसा हिंदुस्तान होगा
इक–दूजे का आदर हो ना किसी का अपमान होगा
रूस और अमरीका तै आजाद यो जहान होगा
दुनिया मैं तै रुबल-डालर ताया जावैगा
हो एक दिन वो भी आवैगा

सतबीर श्रमिक

भारत कोन्या बणया भगत सिंह

भारत कोन्या बणया भगत सिंह जिसा तनै चाहया था
पड़ग्या डाका आजादी पै तमनै खून बहाया था
बणे लुटेरे देश के मालिक आच्छा माणस दुःख भरता
मुखबिर भी आज बणै मन्त्री बिलकुल सरम नहीं करता
जिसकी लाठी भैंस उसीकी नंगा कती नहीं डरता
खूनी करते राज देश में रोज हिन्द मैं न्याय मरता
सै आजादी का गीत अधूरा जो तमनै गाया था
पड़ग्या डाका आजादी पै तमनै खून बहाया था

जादा सै धन थोड़या धोरै जादा हुए गरीब घणे
हम करकै मैहनत तंग रहते जो कुछ ना करैं अमीर बणे
थाणे कोरट अफसर उनके जो अपराधी चोर जणे
बिल्ली पहरेदार दूध की सिंहासन पै नाग तणे
म्हारी छाती पै वो फेर बठा दिया जो तमनै मार भगया था
पड़ग्या डाका आजादी पै तमनै खून बहाया था

सस्ती ज्यान हुई माणस की मंहगी होगी रोटी
खो दिया दीन ईमान करी हर चीज गैल मैं खोटी
खाद बीज और बिजली मंहगी, मंहगी पुस्तक पोथी
चीनी कोला तेल दवाई मंहगे लत्ता धोती
अब सौ का माल मिलै जो एक पइसे मैं आया था
पड़ग्या डाका आजादी पै तमनै खून बहाया था

करैं दलाली अमरीका की गिरवी देश धरैंगे ये
कर्जा लेके ऐश करैं, नहीं म्हारा ख्याल करैंगे ये
दुनिया के मैं श्यान मेट दी, ना करते नास डरेगैं ये
देशी और विदेशी मिल कै अपणे पेट भरेंगे ये
श्रमिक हो नारा पूरा जो भगत सिंह नै लाया था
पड़ग्या डाका आजादी पै तमनै खून बहाया था

सतबीर श्रमिक

गांउ गांउ बाट उठ

गांउ गांउ बाट उठ बस्ती बस्ती बाट उठ
यो देश को मुहार फेरन लाई उठ
हात मा कलम हुनेहरू कलम लिएर उठ
बाजा बजाउन जान्ने हरू बाजा लिएर उठ
गांउ गांउ बाट उठ बस्ती बस्ती बाट उठ
यो देश को मुहार फेरन लाई उठ
हात मा औजार हुने हरू औजार लिएर उठ
पासमा केही न हुने हरू आवाज लिएर उठ
गांउ गांउ बाट उठ बस्ती बस्ती बाट उठ
यो देश को मुहार फेरनलाई उठ

गावं गावं से उठो बस्ती बस्ती से उठो

गावं गावं से उठो बस्ती बस्ती से उठो
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो

हाथ में जिसके कलम है कलम लेके उठो
बाजा बजाना जानने वाले बाजा लेके उठो
गांव गांव से उठो बस्ती बस्ती से उठो
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो

हाथ में जिसके औज़ार है औज़ार लेके उठो
पास में जिसके कुछ भी नहीं आवाज़ लेके उठो

गावं गावं से उठो बस्ती बस्ती से उठो
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो

श्याम तोमर

यो जीवन को बाटो

यो जीवन को बाटो कालो सेतो रातो
कस्तो हो यो अलझो हवा पानी माटो
रात बिती बिहान आउंछ
नयां नयां आशा जगाउंछ
निराश भई किन बस्ने व्यर्थ किन जीवन फाल्ने
यो जीवन को बाटो कालो सेतो रातो
कस्तो हो यो अलझो हवा पानी माटो
पतझर बीति वसन्त आउछ रंगी चंगी फूल फूलाउंछ
हतास भई किन मरने हुरी संग किन डराउने
यो जीवन को बाटो कालो सेतो रातो
कस्तो हो यो अलझो हवा पानी माटो
सपना लाई विपना बनाउंछौं हार लाई जित बनाउंछौं
मुटु भरि हिलोबो की श्रृंजनाको कमल फुलाउंछौं
यो जीवन को बाटो कालो सेतो रातो
कस्तो हो यो अलझो हवा पानी माटो

रनबहादुर गुरुंग

हामिले संघर्ष

हामिले संघर्ष गरेनौ भने आफ्नो हक छाड़नु पर्ला
मिलीजुली अब उठेनौं भने बाचुन्जेल रूनु पर्ला
भोको र नाड़गो बसेर पनि, संघर्ष गर्नें छौं
जनता को हक नमिले सम्म, संघर्ष गर्नें छौं
हामिले संघर्ष गरेनौ भने आफ्नो हक छाड़नु पर्ला
सामन्ती –फटाहा शोसक जाली सबैलाई मार्ने छौं
किसान मजदूर शिक्षक छात्र एक साथ लड़ने छौं
हामिले संघर्ष गरेनौ भने आफ्नो हक छाड़नु पर्ला
शहर गाऊं, खोला र टोला क्रांति विगुल बजने छ
मतभेद छोड़ी एकता जोड़ी क्रांति सेना सजने छ
हामिले संघर्ष गरेनौ भने आफ्नो हक छाड़नु पर्ला

रनबहादुर गुरुंग

रातो झंडा लियेर कामरेड, अगाड़ी बढ़दै जाने छौं

रातो झंडा लियेर कामरेड, अगाड़ी बढ़दै जाने छौं
तिमी भएनौ, यसको दुख छ, तैपनि लड़दै जाने छौं
संसारका सबै नौजवान, हिडी सके आज तिम्रो राह मा
गर्छन हमला, बार–बार ती, जालिमको किला को द्वार मा
भोको पेटबाट, आए छ आवाज, एक नया जहां हामी बनाउने छौं
रातो झंडा लियेर कामरेड, अगाड़ी बढ़दै जाने छौं
तिमी भएनौ, यसको दुख छ, तैपनि लड़दै जाने छौं
कृषक श्रमिक को, हर समूहबाट उठेका छन आज नारा क्रांति का
जुल्म र मृत्यु को विरुद्ध आज, लड़ने कसम खाएका छौं
विश्वलाई स्वतंत्र, गरी जुल्मबाट, शोषण को नाम मेटाउने छौं
रातो झंडा लियेर कामरेड, अगाड़ी बढ़दै जाने छौं
तिमी भएनौ, यसको दुख छ, तैपनि लड़दै जाने छौं

(शिवलाल झवाली द्वारा 'परचम' के हिन्दी गीत का अनुवाद)

सही-सही मर्नु भन्दा

सही-सही मर्नु भन्दा
राम्रो हो लड़ाई
अरे भाई हात उठाउ, ओ बहिनी हात उठाउ
तिम्रो पनि होनी सबलाई
देओस रे दिखाई
अरे भाई हात उठाउ, ओ बहिनी हात उठाउ
भोली वही होस् जो चाहे तिम्रो मन रे
जिंदगी बदलनलाई गर है जतन रे
टुट्ने छन यी पिंजरा ता
हुनी छ रिहाई
अरे भाई हात उठाउ, ओ बहिनी हात उठाउ
टुटेका सपनालाई जोड़न जरूरी
दिलमा हाम्रो यस्तो कस्तो हो यो दूरी
रूख त हाम्रा तर
छाया हो परायी
अरे भाई हात उठाउ, ओ बहिनी हात उठाउ
हामीले त चाहेथ्यौं हांसन–हसाउन
आफ्नो हावा संग–संगै उड़न–उड़ाउन
अम्बरमा को चाहन्छ
पंख को जुदाई
अरे भाई हात उठाउ, ओ बहिनी हात उठाउ
घर सम्म पछि–पछि आयो है अंधेरा
आंखाले हाम्रो देखे को छ वो सवेरा
दुनिया मा प्यार बचोस्, बचोस सच्चाई
अरे भाई हात उठाउ, ओ बहिनी हात उठाउ

(शिवलाल ज्ञवाली द्वारा 'बजमोहन' के हिन्दी गीत का अनुवाद)

जदों मिट्टी उठदी धरती दी

जदों मिट्टी उठदी धरती दी
तकदीर बदलदी लोकां दी

धरती दे जायां दा लहू
रहया डुलदा जुगां–जुगां तों
आखर किन्ना चिर जिवेगी
आखर ऐ मिट्टी बोल पई
जदों मिट्टी उठदी धरती दी
तकदीर बदलदी लोकां दी

तुसी छत्ती झट पिचाणों जी
इस खंजर नू इस खंजर नू
खंजर आले इन हत्था नू
तुसी दुश्मन अपना जाणों जी
जदों मिट्टी उठदी धरती दी
तकदीर बदलदी लोकां दी

हुण फेर कोई न रंग जाए
साड़े लहू नाल अपने हत्थां नू
हुण फेर कदे न मौत आए
बसदियां हंसदिया सत्था नू
जदों मिट्टी उठदी धरती दी
तकदीर बदलदी लोकां दी

अमरजीत चन्दन

सूरजां ते करांगे पड़ाव

सांबियां ते किवें आसि दिलाईच सुरूर
साड़े सीनईच लोड़यां दा ता...
जिन्दगी दे मत्थे उत्ते चार चंद लाके असि
सूरजां ते करांगे पड़ाव...

बड़ा चिर मनाईच सबरा नू पालया
मुड़के नू सेठ दियां गोगड़ाइच ढालया
हत्थाईच अंगार साडे पैराईच भूचाल
असि तुर पएआं मंजिला दी राह...

गए जेड़े जगईचो मुका के सिर अपणे
किवें भूल बैठिए गवां के वीर अपणे
सूलियां दे उत्ते किवे हंसू-हंसू करना है
ओही सानू गए ने सिखा...

साडे संग्रामा दियां लम्बीयां कहाणीयां
तेगां दियां छावां हेटा जम्मीयां कहाणीयां
कंडयाले राहा नालो लम्बे साडे जेरे
ऐहो कित्ते वदद लम्बी ऐ निगाह...

भावें सिरा उत्ते धूप जुल्मां दी तेज है
कीरतां दी मिट्टी पर बड़ी जरखेज है
इस सर बिजिए ते उगदे ने लक्खां
यारों केहां इस मिट्टी दा सुभाव

जसविन्दर सिंह

शांति के सिपाही चले

शांति के सिपाही चले, क्रांति के सिपाही चले
लेके ख़ैरख़्वाही चले, रोकने तबाही चले
शांति के सिपाही चले चले
क्रांति के सिपाही चले चले
बैर भाव तोड़ने, दिल को दिल से जोड़ने
कौम को संवारने, जान अपनी वारने
रोकने तबाही चले चले
लेके ख़ैरख़्वाही चले चले
शांति के सिपाही चले, क्रांति के सिपाही चले
सत्य की संभाल ढाल शांति की ले मशाल
धरती मां के नौनिहाल, हैं निकल पड़े सवाल
रोकने तबाही चले चले
लेके ख़ैरख़्वाही चले चले
शांति के सिपाही चले, क्रांति के सिपाही चले
जय जगत पुकारते बढ़ चले बिना रूके
लेके दिल के वलवले, चल पड़े कमर कसे
रोकने तबाही चले चले
लेके ख़ैरख़्वाही चले चले
शांति के सिपाही चले, क्रांति के सिपाही चले

दुखायल

(अंग्रेजों के राज में सांप्रदायिक उन्माद के ख़िलाफ गाया जाने वाला सिंध के जनकवि दुखायल का लोकप्रिय गीत)